डाक पंजीयन नं. 99/2021-23
E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com
website:www.adhuniksamachar.com

PG-5

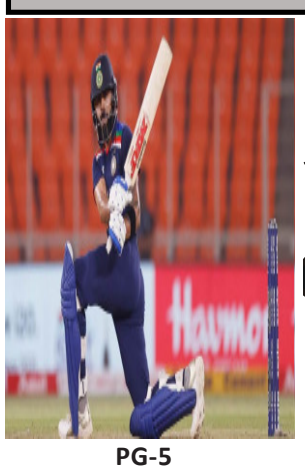

PG-5

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

सिनेमा:7 दिनों तक पंकज त्रिपाठी ने खाई थी जेल की हवा

वर्ष -08 अंक -163 | प्रयागराज, मंगलवार 06 सितम्बर, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

नेपाल में आर्मी चीफ मनोज पांडे ने की अपने समकक्ष से मुलाकात

(आधुनिक मसाचार सेवा)
काठमांडूए । भारतीय सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने सोमवार को अपने नेपाली समकक्ष जनरल प्रभु राम शर्मा से मुलाकात की और सेना मुख्यालय में अनेकों गैर घातक हथियार ;छवद स्मजींस मंचवदेद्ध सौंपे। पांडे रविवार को ही नेपाल पहुंच गए। वहां वे पांच दिवसीय दौरे पर हैं। नेपाल में सेना प्रमुख मनोज पांडे देश के शीष सिविल व मिलिट्री नेतृत्व से बात करेंगे। इसके जरिए वे दो पड़ोसी देशों के साथ रक्षा संबंध मजबूत करने को लेकर बातचीत करेंगे। भारतीय सेना प्रमुख को वहां के आर्मी हेडक्वार्टर में गार्ड आफ आनर मिला।नेपाल आर्मी ने ट्वीट में कहाए भारतीय सेना में चीफ आफ आर्मी स्टाफ जनरल मनोज पांडे ने जनरल प्रभुराम शर्मा को गैर घातक हथियारों का जखीरा सौंपा है। एक अन्य ट्वीट

में नेपाल की आर्मी ने बतायाए श्जनरल मनोज पांडे ने आर्मी पवेलियन में शहीदों के स्मारक पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।भारतीय सेना के आर्मी वाइव्स वेलफेयर एसोसिएशन की चेयरपर्सन अर्चना पांडे भी जनरल मनोज पांडे के साथ नेपाल दौरे पर हैं। दोनों देश की सेनाओं के बीच सहयोग बढ़ाने को लेकर आर्मी चीफ जनरल नेपाल गए हैं। आज नेपाल के राष्ट्रपति कार्यालय ने बतायाए श्मनोज पांडे को नेपाल आर्मी के जनरल की मानद उपाधि से शीतल निवास में आयोजित एक समारोह में राष्ट्रपति बिद्या देवी भंडारी द्वारा सम्मानित किया जाएगा। नेपाल और भारत के सेना प्रमुखों द्वारा दोनों देशों के दौरे की परंपरा काफी पुरानी है। यह परंपरा साल 1950 में शुरू हुई थी। भारत भी नेपाल के सेना प्रमुख को भारतीय सेना के जनरल की मानद उपाधि प्रदान करता है।भारत के लिए नेपाल का स्थान अहम है और दोनों देशों की ओर से हमेशा श्रोटी बेटी संबंधश् का जिक्र किया जाता रहा है। भारत के पांच राज्यों. सिक्किमए पश्चिम बंगालए बिहारए उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के साथ 1,850 किमी से अधिक सीमा को साझा करने वाला नेपाल कई क्षेत्र में भारत पर आश्रित है।

शिक्षक दिवस पर पीएम मोदी, गृह मंत्री अमित शाह व जेपी नड्डी ने दी बधाई

सर्वेपल्ली राधाकृष्णन को किया याद

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली। भारत में हर साल 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। इस दिन देश के प्रथम उप राष्ट्रपति डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन को याद किया जाता

है। आज शिक्षक दिवस के अवसर पर पीएम मोदी ने बधाई दी। पीएम मोदी ने र्ऊीम्पै ऊॅब् की बधाई। पीएम ने ट्वीट कर लिखा कि शिक्षक दिवस की बधाई, खासकर उन सभी मेहनती शिक्षकों को जो युवा मन में शिक्षा की खुशियां फैलाते हैं। मैं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन को भी उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं आज शिक्षक दिवस के अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सभी गुरूओं को बधाई दी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने ट्वीट कर लिखा कि शिक्षक अपने ज्ञान से न केवल बच्चों को शिक्षित कर उनके भविष्य को संवारता है बल्कि एक सशक्त राष्ट्र को आकार देने में भी अद्वितीय योगदान देता है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने आगे लिखा कि प्रख्यात शिक्षाविद भारतरत्न डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की जयंती पर उन्हें नमन व सभी परिश्रमी गुरुजनों को 'शिक्षक दिवस' की शुभकामनाएं शिक्षक अपने ज्ञान से न केवल बच्चों को शिक्षित कर उनके भविष्य को संवारता है बल्कि एक सशक्त राष्ट्र को आकार देने में भी अद्वितीय योगदान देता है। वहीं, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने भी शिक्षक दिवस की बधाई दी। उन्होंने ट्वीट कर लिखा कि पूर्व राष्ट्रपति व महान शिक्षाविद, भारत रत्न डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की जयंती पर कोटिशः नमन। आप सभी को शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। शिक्षा के महत्व को सर्वोपरि रखने वाले डॉ.राधाकृष्णन का आदर्श जीवन, सहज व्यक्तित्व, सेवाभाव आज भी हमें प्रेरित करता है। पूर्व राष्ट्रपति व महान शिक्षाविद, भारत रत्न डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की जयंती पर कोटिशः नमन। आप सभी को शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। शिक्षा के महत्व को सर्वोपरि रखने वाले डॉ.राधाकृष्णन का आदर्श जीवन, सहज व्यक्तित्व, सेवाभाव आज भी हमें प्रेरित करता है।भारत के प्रथम उप राष्ट्रपति डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन का आज के ही दिन 5 सितंबर, 1888 को तमिलनाडु की राजधानी चेनन्ई के तिरुमनी गांव में हुआ था। जब डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन देश के राष्ट्रपति बनें, तो कई छात्र उनसे मिलने पहुंचें। इस दौरान उन्होंने डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन पर शिक्षक दिवस मनाने की अनुमति मांगी। उस समय डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन मना नहीं कर सके और उन्होंने इजाजत दे दी।

चार दिवसीय दौरे पर नई दिल्ली पहुंची बांग्लादेश की पीएम शेख हसीना

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना सोमवार को नई दिल्ली पहुंच गई हैं। पीएम शेख हसीना का यह चार दिन का भारत दौरा है। इस दौरान बांग्लादेश की प्रधानमंत्री पीएम मोदी समेत कई शीर्ष नेताओं और अधिकारियों से मुलाकात करेंगी। इससे पहले शेख हसीना ने कई वैश्विक मुद्दों को लेकर मोदी सरकार की जमकर सराहना की है। भारत दौर से पहले शेख हसीना ने कोरोना महामारी के दौरान बांग्लादेश की मदद करने के लिए मोदी सरकार की जमकर प्रशंसा की। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने रूस.यूक्रेन युद्ध के चलते पूर्वी यूरोप में फंसे अपने देश के छात्रों को बचाने की दिशा

में भी मोदी सरकार की पहल की सराहना की। भारत हमारा पड़ोसी देशए दोनों के बीच हैं बहुत अच्छे संबंध उन्होंने कहा कि भारत हमारा पड़ोसी देश हैए हमारे बीच बहुत अच्छे संबंध हैं। हमारे बीच कई द्विपक्षीय समस्याएं थीं। यह सच है लेकिन हम कई समस्याओं का समाधान भी करते हैं। भारत एक विशाल देश है जिसे आप समायोजित कर सकते हैं। हमारे देश में 101 लाख रोहिंग्या हैं। कुछ लोग नशीले पदार्थों की तस्करीए हथियारों की लड़ाई और महिला तस्करी में लिप्त हैं। जैसे ही वे लोग घर लौटते हैं यह हमारे लिए अच्छा रहेगा।इसके साथ ही उन्होंने कहा कि मैं पीएम मोदी को धन्यवाद देती हूंए जिन्होंने कोरोना वैक्सीन बनाने की पहल की। यह एक अच्छी और बेहद मददगार पहल है। साथ ही कहा कि पीएम मोदी ने न केवल बांग्लादेश बल्कि कई अन्य दक्षिण एशियाई देशों को कोरोना की वैक्सीन वितरित की है।

ओलंपिक गेम्स के इतिहास की सबसे दर्दनाक घटनाए जब फलस्तीन आतंकियों ने कर दी थी 11 इजरायली खिलाड़ियों की हत्या

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली। ओलंपिक गेम्स के इतिहास में 1972 का वो साल कोई नहीं भूलता है जब गेम्स के दौरान फलस्तीन आतंकियों ने 11 इजरायली खिलाड़ियों को उनके होटल में बंधक बना लिया था। बाद में इस पूरी घटना का अंत भी बेहद दर्दनाक हुआ था। इस घटना में इजरायल ने बंधक बनाए गए अपने सभी खिलाड़ियों को खो दिया था। म्यूनिख ओलंपिक गेम्स की शुरुआत 26 अगस्त 1972 को बेहद रंगारंग कार्यक्रम के साथ हुई थी। उस वक्त किसी को ये पता नहीं था कि आने वाले दिनों में क्या घटने वाला है। चारों तरफ ओलंपिक गेम्स में हिस्सा लेने वाले खिलाड़ियों की सुरक्षा के लिए पुख्ता व्यवस्था की गई थी। होटल से लेकर स्टेडियम और रास्त में भी सुरक्षाकर्मी तैनात थे। म्यूनिख से करीब 20 किमी दूर बने ओलंपिक गेम्स विलेज के एक होटल में इजरायल के खिलाड़ी ठहरे हुए थे। 6 सितंबर 1972 को पांच नकाबपोश फलस्तीन आतंकी होटल में घुस गए। उन्होंने सबसे पहले वेटलिफ्टर जोसेफ रोमानो को गोली मारी। इसके बाद उनका दूसरा शिकार रेसलिंग के कोच मोशे वेनबर्ग बने

थे। इस घटना से होटल में अफरातफरी मच गई थी। हर कोई इधर उधर भाग रहा था। इस बीच आतंकियों ने 9 इजरायली खिलाड़ियों को बंधक बना लिया था। उन्होंने जर्मनी की सरकार से मां ग रखी थी कि इजरायल द्वारा गिरफ्तार उनके कुछ चुनिंदा नेताओं को तत्काल रिहा कर दिया जाए। आतंकियों की तरफ से धमकी दी गई थी कि यदि ऐसा नहीं हुआ तो वो सभी खिलाड़ियों को मार देंगे। दूसरी तरफ स्टेडियम में ओलंपिक गेम्स के सभी इवेंट्स को जारी रखने का फैसला लिया गया था। वहां पर इसकी कोई जानकारी नहीं थी। जर्मनी के गृहमंत्री ने आतंकियों को आश्वासन दिया कि उनकी मांगों पर विचार किया जाएगा। इस बीच जर्मनी ने आतंकियों से बात कर उन्हें एक हेलीकाप्टर के साथ सुरक्षित कायरो भेजने की बात कही। इस पर आतंकियों ने अपने साथ सभी अगवा खिलाड़ियों को ले जाने का दबाव बनायाए जिस पर जर्मनी की सरकार झुक गई। कुछ गाड़ियों में आतंकियों और अगवा खिलाड़ियों को बैठाकर म्यूनिख से दूर बवारिया एयरपोर्ट पर ले जाया गया। जर्मनी का प्लान था कि वो वहां पर एक आपरेशन को अंजाम देकर अगवा खिलाड़ियों को सुरक्षित छुड़वा लेगा। बवारिया एयरपोर्ट पहुंचते ही बिल्डिंगों पर बैठे शार्प शूटने ने निशाना लगाने शुरू कर दिए। एयरपोर्ट पर अफरातफरी का माहौल था। आतंकी किसी भी कीमत पर खिलाड़ियों को छोड़ना नहीं चाहते थे। गोलीबारी के बीच एक आतंकी ने हथगोला निकाल कर हेलीकाप्टर पर फेंक दिया। एक तेज धमाके के साथ ही पूरा मंजर बदल गया। चारों तरफ लाशें बिछी थीं। बचे हुए आतंकी लगातार गोलाबारी कर रहे थे। कुछ देर बार जर्मनी की रेडियो पर ऐलान किया गया कि सभी बंधकों को सुरक्षित छुड़ा लिया गया है। लेकिनए एयरपोर्ट की हकीकत कुछ और ही थी। एक.एक कर सभी आतंकियों को मार गिराया गया।

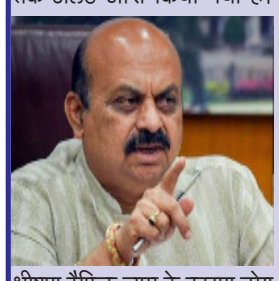

लेकिन जब मुआयना किया गया तो वहां पर एक भी खिलाड़ी जीवित नहीं था। सभी मारे जा चुके थे। आतंकियों और सुरक्षाकर्मियों की गोली के शिकार एयरपोर्ट पर मौजूद कुछ कर्मी भी हुए थे। इस मं
गई कि कोई खिलाड़ी जिंदा नहीं बचा। इसके बाद कुछ देर के लिए ओलंपिक गेम्स के सभी इवेंट्स रोक दिए गए थे। ओलंपिक के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ था। इस घटना पर इजरायल ने जर्मनी

शिक्षक दिवस पर पीएम मोदी का बड़ा एलान देश भर में 14,500 स्कूलों को अपग्रेड करेगी सरकार जानें क्या है योजना

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने प्रधानमंत्री स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया ;पीएम.एसएचआरआईद्ध योजना के तहत देश भर में 14ए500 स्कूलों को अपग्रेड और विकसित करने का एलान किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शिक्षक दिवस के मौके पर सोमवार को बताया कि प्रधानमंत्री स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया ;च्तंकींद डंदजतप ैबीववसे थ्वत त्पेपदह प्दकपंए च्ड ैभ्त्प् ल्वरदंद्ध योजना के तहत देश भर में 14ए500 स्कूलों को अपग्रेड किया जाएगा। उन्होंने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की पूरी भावना को समाहित करते हुए पीएम.श्री स्कूल मॉडल स्कूल बनेंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने ट्वीट कर कहा. आज शिक्षक दिवस ;ज्मंबीमते क्ंलद्ध पर मुझे एक नई पहल की घोषणा करते हुए बेहद खुशी हो रही है। प्रधानमंत्री स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया योजना के तहत देशभर में 14ए500 स्कूलों को अपग्रेड किया जाएगा जिससे ये मॉडल स्कूल बन जाएंगे और नई शिक्षा नीति की पूरी भावना को समाहित

करेंगे। पीएम.श्री स्कूलों में शिक्षा प्रदान करने का तरीका आधुनिकए परिवर्तनकारी और समग्र होगा। इसके तहत डिस्कवरी और शिक्षण केंद्रित लर्निंग पर जोर दिया जाएगा।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ;च्ड छंतमदकतं डवकपद्ध ने कहा कि पीएम.श्री स्कूलों में नवीनतम तकनीकए स्मार्ट कक्षाओंए खेल और आधुनिक बुनियादी सुविधाओं पर ध्यान दिया जाएगा। हाल के वर्षों में राष्ट्रीय शिक्षा नीति ;छंजपवदंस म्कनबंजपवद च्वसपबलद्ध ने देश के शिक्षा क्षेत्र में रिफार्म लाने का काम किया है। मुझे यकीन है कि पीएम.श्री स्कूल नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की भावना से देश के लाखों बच्चों को लाभान्वित करेंगे। इससे पूर्व पीएम मोदी ने राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता शिक्षकों के साथ संवाद किया। पीएम मोदी ने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की काफी सराहना हो रही है। इसके जरिए भारत अपने शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए सही दिशा में आगे बढ़ रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनाने में हमारे शिक्षकों का बहुत बड़ा रोल रहा है। लाखों की तादात में हमारे शिक्षकों ने इसे बनाने में अपना योगदान दिया है। शिक्षक की भूमिका व्यक्ति को रोशनी दिखाने की होती है। 2047 में देश गढ़ने का काम शिक्षकों के हाथ में है।

बारिश के कारण टेक कंपनियों को 225 करोड़ रुपये का नुकसानए मुख्यमंत्री बोम्मई करेंगे मामले पर चर्चा

(आधुनिक मसाचार सेवा)
बेंगलुरुए। कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु टेक कंपनियों का हब है। भारी बारिश के कारण शहर में जगह जगह पानी भर गया है। मौसम विभाग की ओर से 7 सितंबर तक अलर्ट जारी किया गया है।

भीषण ट्रैफिक जाम के कारण लोग आफिस तक नहीं पहुंच पा रहे हैं और जो पहुंच रहे हैं उन्हें कड़ी मशक्कत करनी पड़ रही है। इसके कारण हुए नुकसानों को लेकर सोमवार को मुख्यमंत्री बासवराज बोम्मई ने टेक कंपनियों को आश्वासन दिया है। मुख्यमंत्री बोम्मई ने कहाए श्जलजमाव के कारण हुई कठिनाइयों पर हम प्ज् कंपनियों के साथ बात करेंगे। बारिश के कारण हुई क्षति व मुआवजे पर चर्चा करेंगे।श् दरअसल यहां की कंपनियों को बारिश व जलजमाव के कारण 225 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। बता दें कि प्ज् कंपनियों ने मुख्यमंत्री से आउटर रिंग रोड मामले पर आने वाली मुश्किलों का समाधान करने को कहा था।लगातार हुई भारी बारिश के कारण बेंगलुरु की सड़कें जलमगन हो गई और भयंकर ट्रैफिक जाम से लोगों को जूझना पड़ रहा है। कोरमंगला समेत बेंगलुरु के अनेक हिस्सों में सामान्य जनता बारिश के कारण हुए ट्रैफिक जाम से परेशान है। स्थानीय लोगों में से एक ने बताया कि भारी बारिश के कारण शहर में जगह.जगह पानी भर गया है।न्यूज एजेंसी एएनआइ के अनुसार मंगलुरु में मराठाहल्ली.सिल्क बोर्ड जंक्शन रोड के पास बारिश के बाद जलभराव हो गया। ऐसे में जलभराव वाली सड़क पर एक व्यक्ति बुरी तरह फंस गया जिसे बचाने के लिए स्थानीय सुरक्षा गार्डों को आगे आना पड़ा।बेंगलुरु के कई इलाकों में नौकाएं भेजी गई हैं। यहां का सबसे अधिक प्रभावित इलाका इलेक्ट्रानिक सिटीए मराथाहल्लीए आउटर रिंग रोडए महादेवापुरए व्हाइटफील्ड और बोम्मनाहल्ली है।

संजय राउत की न्यायिक हिरासत 19 सितंबर तक बढ़ीए ईडी ने एक अगस्त को किया था गिरफ्तार

(आधुनिक मसाचार सेवा)
मुंबईए। दरंल त्नज बेन्जवकल म्ाजमदकमकरू धन शोधन निवारण अधिनियम ;पीएमएलएद्ध की एक विशेष अदालत ने पात्रा चॉल भूमि घोटाला मामले में शिवसेना सांसद संजय राउत की न्यायिक हिरासत 19 सितंबर तक बढ़ा दी है। प्रवर्तन निदेशालय ;ईडीद्ध ने राउत को 1 अगस्त को मनी लॉन्ड्रिंग से हुई। आरोप है कि महाराष्ट्र हाउसिंग एंड डेवलपमेंट अथॉरिटी यानी डभ्।क। के साथ प्रवीण राउतए गुरु आशीष कंस्ट्रक्शन और हाउसिंग डेवलपमेंट एंड इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड की मिलीभगत से घोटाले को अंजाम दिया गया। म्हाडा ने पात्रा चॉल के रिडेवलपमेंट का कार्य गुरु आशीष कंस्ट्रक्शन कंपनी को दिया

के सिलसिले में गिरफ्तार किया था। राउत आठ दिनों के लिए ईडी की हिरासत में थेए जब उन्हें 9 अगस्त को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया थाए जब ईडी ने कहा था कि उनकी और हिरासत में पूछताछ की आवश्यकता नहीं है शिवसेना नेता संजय राउत पात्रा चाल जमीन घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में फंसे हैं। पात्रा चॉल लैंड स्कैम की शुरूआत 2007 थाण् इसमें 1034 करोड़ के घोटाले का आरोप है। संजय राउत के दोस्त प्रवीण राउत इस मामले में आरोपी हैं। कंस्ट्रक्शन कंपनी पर चाल के लोगों के साथ धोखाधड़ी का आरोप लगाया गया है। ये कंपनी प्रवीण राउत की है। पात्रा चॉल में 3 हजार फ्लैट बनाए जाने थे। 672 फ्लैट चॉल के निवासियों को मिलने थे। प्राइवेट बिल्डरों को जमीन बेचने का आरोप है।

श्रीलंका से भारत आए 13 लोग केरल में गिरफ्तार पुलिस की विशेष टीम ने शुरू की जांच

(आधुनिक मसाचार सेवा)
चेन्नई। श्रीलंका में जारी आर्थिक संकट से बचने के लिए भारत आए श्रीलंकाई नागरिकों की विस्तृत जांच शुरू हो गई है। तमिलनाडु पुलिस की विशेष टीम ने सोमवार सुबह केरल के कोल्लम से गिरफ्तार किए गए 13 श्रीलंकाई तमिलों की विस्तृत जांच शुरू की। तमिलनाडु पुलिस की श्फश् ब्रांच के अधिकारियों सहित विशेष पुलिस दल केरल पुलिस की हिरासत में श्रीलंकाई नागरिकों से पूछताछ करने कोल्लम पहुंची। तमिलनाडु पुलिस के एक अधिकारी ने न्यूज एजेंसी पीटीआई को बताया कि जांच में उन दो एजेंटों को टारगेट किया गया हैए जो इन लोगों को श्रीलंका से भारत लाने में शामिल थे। केंद्रीय खुफिया एजेंसियों ने पहले ही चेन्नई और तमिलनाडु के अन्य एयरपोर्टों पर आए कुछ अवैध लोगों के बारे में सूचना दी थी। जबकि केरल पुलिस की हिरासत में मौजूद केवल 13 लोग अवैध रूप से आस्ट्रेलिया जाने की कोशिश कर रहे हैं। तमिलनाडु पुलिस को संदेह है कि अभी और भी लोग छिपे हो सकते हैं क्योंकि 13 लोगों के साथ समुद्री मार्ग से अवैध मानव तस्करी संभव नहीं है। बता दें कि 12 जनवरीए 2018 को कोच्चि में मुनंबम के पास मलियांकारा घाट से बच्चों और गर्भवती महिलाओं सहित 243 लोगों का एक समूह मछली पकड़ने वाली नाव से अवैध रूप से भारत के से निकली थी। नाव में सवार रैकेट के सरगनाओं सहित नाव में सवार लोगों के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 46 शिक्षकों को देंगी राष्ट्रीय पुरस्कार

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली। देशभर में आज शिक्षक दिवस ;ज्मंबीमतश् क्ंलद्ध मनाया जा रहा है। इस खास मौके पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू आज शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कार 2022श् प्रदान करेंगी। इस साल देश के विभिन्न हिस्सों से 46 शिक्षकों को प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए चुना गया है। चयनित शिक्षक हिमाचल प्रदेशए हरियाणाए पंजाबए महाराष्ट्र और तेलंगाना सहित अन्य क्षेत्रों से हैं। यह कार्यक्रम नई दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित किया जाएगा और शिक्षा मंत्रालय के दूरदर्शन और स्वयं प्रभा चैनलों पर इसका सीधा प्रसारण किया जाएगा। इस अवसर पर केंद्रीय शिक्षा एवं कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री धर्मेंद्र प्रधान भी मौजूद रहेंगे। इस मामले की अधिक जानकारी देते हुए शिक्षा मंत्रालय ने ट्वीट कर कहाए वन्तज्मंबीमतेवन्तच्तपकमरू ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए हमारे शिक्षकों को धन्यवाद। आज राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू देशभर के बेहतरीन शिक्षकों को छ 2022 से सम्मानित करेंगी।शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या राष्ट्रपति ने दी बधाई वहींए राष्ट्रपति मुर्मू ने रविवार को शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर बधाई दी थी। राष्ट्रपति मुर्मू के हवाले से राष्ट्रपति भवन की ओर से एक आधिकारिक बयान में कहा गयाए श्शिक्षक दिवस के अवसर पर मैं अपने देश के सभी शिक्षकों को अपनी शुभकामनाएं देती हूं।

सीएम से मिले बलवीर गिरि महंत नरेन्द्र गीरी की पुण्यतिथि कार्यक्रम में आने का दिया न्योता

(आधुनिक मसाचार सेवा)

प्रयागराज। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष रहे महंत नरेंद्र गिरि की प्रथम पुण्यतिथि पर्व पर संत-महात्माओं के साथ विशिष्टजनों का जमघट लगेगा। नरेंद्र गिरि की पुण्यतिथि 10 सितंबर

को मनाई जाएगी। इसे लेकर प्रयागराज के अल्लापुर मोहल्ले में स्थित श्रीमठ बाघम्बरी गद्दी में जोर-शोर से तैयारी चल रही है। अतिथियों के खाने-पीने व रुकने की विशेष व्यवस्था की जाएगी श्रीमठ बाघम्बरी गद्दी के पीठाधीश्वर हैं श्रीमहंत बलवीर गिरि : श्रीनिरंजनी अखाड़ा के सचिव व श्रीमठ बाघबरी गद्दी के पीठाधीश्वर श्रीमहंत बलवीर गिरि ने आज मंगलवार को लखनऊ में हैं। उन्होंने सुबह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात करके पुण्यतिथि कार्यक्रम में शामिल होने का आमंत्रण दिया। मुख्यमंत्री योगी ने व्यस्तता अधिक न होने पर कार्यक्रम में शामिल होने का आश्वासन दिया है। महंत नरेंद्र गिरि व प्रयागराज को लेकर बलवीर गिरि से काफी देर तक चर्चा की बलवीर गिरि ने कुंभ कार्यों पर सरकार की सराहना की : बलवीर गिरि ने महाकुंभ को लेकर चल रही सरकार की कवायद की सराहना की। साथ ही संतों व श्रद्धालुओं को अधिक सुविधा देने को लेकर कुछ सुझाव दिए। इस पर मुख्यमंत्री ने उचित कार्रवाई कराने का भरोसा दिया है। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक से मिले बलवीर गिरि : बलवीर गिरि ने उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक सहित तमाम विशिष्ट लोगों से मिलकर 10 सितंबर को होने वाले महंत नरेंद्र गिरि की पुण्यतिथि कार्यक्रम में शामिल होने का आग्रह किया है। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कार्यक्रम में शामिल होने का आश्वासन दिया। उनके अलावा 13 अखाड़ों के अध्यक्ष, सचिव सहित समस्त प्रमुख महात्माओं, अखाड़ा परिषद के सारे पदाधिकारियों को आमंत्रित किया गया है। महंत नरेंद्र गिरि प्रभावशाली संत थे : अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष रहे महंत नरेंद्र गिरि की गिनती देश के प्रभावशाली संतों में होती थी। उन्होंने 20 सितंबर 2021 को रहस्यमय स्थिति में श्रीमठ बाघम्बरी गद्दी में फंदे से लटककर खुदकुशी कर ली थी।

18 विषयों में पीएचडी कर सकेंगे छात्र छात्राएं, किन विषयों में मिलेगी सुविधा

(आधुनिक मसाचार सेवा)

प्रयागराज। प्रो. राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) राज्य विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद पहली बार पीएचडी कराने जा रहा है। यहां इस सत्र से छात्र-छात्राएं 18 विषयों में पीएचडी कर सकेंगे। राज्य विश्वविद्यालय ने पहले 11 विषयों में पीएचडी कराने की योजना बनाई थी पर बाद में सात और विषय जोड़ दिए गए हैं। शोध केंद्र और सीटों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। राज्य विश्वविद्यालय प्रशासन सितंबर में ही प्रवेश परीक्षा की अधिसूचना जारी करेगा और आवेदन प्रक्रिया शुरू होगी राज्य विश्वविद्यालय के 11 राजकीय डिग्री कालेज में पीएचडी : राज्य विश्वविद्यालय ने जून में ही पीएचडी प्रवेश की कवायद शुरू की थी। विश्वविद्यालय ने 11 राजकीय डिग्री कालेजों में पीएचडी की पढ़ाई के लिए बने शोध केंद्र बनाने के लिए

अवेदन मांगा था। बाद में इसमें एडेड कालेजों को भी शामिल करते हुए पीएचडी की विषयों की संख्या बढ़ाकर 18 कर दी गई। शोध केंद्रों के निरीक्षण की प्रक्रिया अंतिम चरण में है। इसके बाद शोध पर्यवेक्षक और उनके अधीन आने वाली सीटों की संख्या तय होगी। शोध प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू होगी : शोध केंद्रों के निरीक्षण के लिए गठित निरीक्षण मंडल अपनी रिपोर्ट राज्य विश्वविद्यालय को सौंप चुका है। अब इन रिपोर्ट के आधार पर विश्वविद्यालय शोध केंद्रों को हरी झंडी देगा और इसके बाद शोध प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। कला, विज्ञान, वाणिज्य और प्रबंधन संकाय के 18 विषयों में पीएचडी होगी। क्या बोले राज्य विश्वविद्यालय के कुलपति : राज्य विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अखिलेश कुमार सिंह ने बताया कि जल्द ही प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू होगी। इससे पहले कुछ औपचारिकताएं है।

सर्वर खराब होने से अस्पताल में पंजीकरण ठप, मरीज तीमारदार 1 घंटे रहे परेशान

(आधुनिक मसाचार सेवा)

प्रयागराज। एन्क्वास परीक्षण में 'पास' होने की उम्मीद लगाए तेज बहादुर सप्रू चिकित्सालय यानी बेली अस्पताल में मंगलवार को बड़ी तकनीकी दिक्कत हुई। इस अस्पताल में सर्वर खराब हो गया। इससे मरीजों के पंजीकरण ठप हो गए। पंजीकरण कर्मी हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे। इस बीच मरीज व तीमारदारों की लंबी लाइन लग गई। गर्मी और धूप के चलते भी परेशान हो रहे लोगों ने कहा कि पंजीकरण मैनुअल कर लिया जाए लेकिन किसी की सुनवाई नहीं हुई। यह समस्या करीब एक घंटे तक रही अस्पताल के काउंटर पर लंबी

लाइन लगी : वायरल बुखार और अन्य बीमारियों के सीजन में इन दिनों अस्पताल मरीजों से खचाखच भरे हैं। न तो ओपीडी में डाक्टरों को फुर्सत है न ही पंजीकरण कर्मियों को। ऐसे में मंगलवार को बेली अस्पताल का सर्वर ही खराब हो गया। इससे पंजीकरण, जांच के लिए शुल्क जमा करने की प्रक्रिया ठप हो गई। काउंटर के विंडो पर लोगों को काफी देर तक इंतजार करना पड़ा। मैनुअल पर्चा बनवाने की बात काउंटर पर बैठे कमिर्यों ने अनसुनी कर दी : बेली अस्पताल में नगर क्षेत्र के लोग इलाज कराने पहुंचते हैं तो दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्र से भी आते हैं। इन सभी को मंगलवार को परेशानी हुई। अस्पताल में सर्वर खराब हुआ तो काउंटर पर लोगों ने कहा कि पर्चा मैनुअल बना दिया जाए ताकि समय की बर्बादी न हो। डाक्टर को दिखाकर घर लौट जाएं। इस मांग को पंजीकरण कमिर्यों ने अनसुनी कर दी क्या बोले जेबी अस?पताल के अधीक्षक : बेली अस्पताल के अधीक्षक डा. एमके अखौरी ने कहा कि पंजीकरण कुछ देर के लिए रुका था। अस्पताल में मरीज अधिक आ भी रहे हैं। दूरदराज से आए लोगों का धूप और गर्मी में परेशान होना कष्टकारी है। तकनीकी खराबी जल्द ही दूर कराकर पंजीकरण शुरू कराया गया लंबी लाइन लगने से दो घंटे बाद बना पर्चा : फाफामऊ से आए महेंद्र सिंह और सलोरी निवासी नेहा अग्रवाल ने बताया कि लाइन काफी लंबी लगी थी, एक घंटे से पंजीकरण शुरू का इंतजार कर रहे थे। पंजीकरण शुरू हुआ तो इसके भी एक घंटे बाद ही वह विंडो तक पहुंच सके।

एक मुश्त समाधान योजना 30 सितम्बर तक लागू

(आधुनिक मसाचार सेवा)

प्रतापगढ़। वरिष्ठ प्रबन्धक प्रदेश सहकारी ग्राम विकास बैंक लि0 शाखा प्रतापगढ़ ने अवगत कराया है कि एक मुश्त समाधान योजना की समाप्ती की अन्तिम तिथि 30 सितम्बर 2022 है जिसमें कृषकों को 30 प्रतिशत से 100 प्रतिशत तक की ब्याज में छूट प्रदान की जा रही है। उ0प्र0 सहकारी ग्राम विकास बैंक के क्षेत्रीय प्रबन्धक राम हर्ष प्रसाद ने बताया है कि सहकारी ग्राम विकास बैंक लि0 की जनपद प्रतापगढ़ की शाखायें- प्रतापगढ़, कुण्डा, लालगंज अझारा, पट्टी व रानीगंज के कृषकों को एक मुश्त समाधान योजना का लाभ दिया जा रहा है। उनके द्वारा यह भी बताया गया कि ऋण न अदा करने एवं एक मुश्त समाधान योजना का लाभ न लेने वाले कृषकों पर नीलामी/कुर्की/वारण्ट की कार्यवाही 30 सितम्बर 2022 के बाद की जायेगी।

जिला कारागार का जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव ने किया निरीक्षण

(आधुनिक मसाचार सेवा)

प्रतापगढ़। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव अनुपम दुबे ने जिला कारागार का निरीक्षण किया एवं बन्दियों को विधिक रूप से जागरूक किया। निरीक्षण के दौरान जेलर आर0के0 पाण्डेय द्वारा अवगत कराया गया कि जिला कारागार में 1197 बन्दी निरूद्ध है जिसमें 1029 विचाराधीन बन्दी है। इसमें महिला 32 तथा 956 पुरूष एवं किशोर बन्दियों की संख्या 41 है। सिद्धदोष बन्दियों की संख्या 150 बतायी गयी जिसमें 04 महिला बन्दी व 146 पुरूष बन्दी शामिल है। जेल में निरूद्ध महिला बन्दियों के साथ कुल 07 बच्चे रह रहे है। महिला बैरिक में निरूद्ध 01 महिला बन्दी गर्भवती बतायी गयी। जेल में बन्दियों के लिये कोरोना जांच की व्यवस्था है। सचिव द्वारा जिला कारागार में स्थित महिला बैरक, पाकशाला, जेल अस्पताल, लीगल एण्ड क्लीनिक एवं वीडियो कान्फ्रेसिंग रूम सहित जेल परिसर की साफ-सफाई, महिला बन्दियों की तलाशी रूम का निरीक्षण किया गया। प्रत्येक बैरिक में मनोरंजन के लिये टी0वी0 लगी है। इस अवसर पर जेलर को निर्देशित किया गया कि जिन बन्दियों को अपने मुकदमें की पैरवी हेतु निःशुल्क पैनल अधिवक्ता की आवश्यकता है उनके आवेदन पत्र लिखित रूप में प्राप्त करके उनके आवेदन पत्र रजिस्टर में अंकित करके जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कार्यालय को उपलब्ध कराये जिससे बन्दियों को उनके मुकदमें की पैरवी हेतु निःशुल्क अधिवक्ता उपलब्ध कराया जा सके। इस अवसर पर सचिव द्वारा जिला कारागार में निरूद्ध बन्दियों को उनके अधिकारों एवं प्लीबारगेनिंग के सम्बन्ध में विधिक जानकारी देते हुये जागरूक किया गया। इस अवसर पर जेल विजिटर विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी एडवोकेट द्वारा किशोर बन्दियों को उनके विधिक अधिकारों एवं प्लीबारगेनिंग तथा जमानत के सम्बन्ध में विधिक जानकारी देते हुये जागरूक किया गया। निरीक्षण के दौरान उप जेलर द्वारा जानकारी दी गयी कि जेल में निरूद्ध अधिकांश सिद्धदोष बन्दियों की अपील हो चुकी है, जिन बन्दियों की अपील नही हुई है उनके अपील किये जाने हेतु कार्यवाही करायी जा रही है जो सम्बन्धित न्यायालयों में विचाराधीन है। जेल निरीक्षण के दौरान जेल अधिकारी को निर्देशित किया गया कि जिला कारागार की प्रतिदिन साफ-सफाई कराने के साथ-साथ सेनेटाइज कराया जाये। जेल में स्थापित लीगल एण्ड क्लीनिक को नियमित रूप से संचालित करते हुये अभिलेखों को दुरूस्त किया जाये। इस अवसर पर जेलर आर0के0 पाण्डेय,उप जेलर सुनील कुमार द्विवेदी उपस्थित रहे।

शिक्षक होना और शिक्षा प्रदान करना पृथ्वी पर सबसे महान काम करना है

(आधुनिक मसाचार सेवा)

प्रयागराज। 5 सितंबर, भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस को भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन हम सभी अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षकों द्वारा किए गए प्रयासों को याद करते हैं और उनकी सराहना करते हैं। यह हमारे जीवन में उनके विशेष योगदान के लिए शिक्षकों को सम्मानित करने का भी दिन है। शिक्षकों के रूप में यह उनकी कड़ी मेहनत है, जिसने हमें यहां तव पहुंचने और अब तक जो कुछ भी हासिल किया है उसे हासिल करने में मदद की है। हम उन्हें गुरु, स्वामी, सर और मैडम कह सकते हैं। जैसा कि किसी ने एक बार कहा था, जब जीवन ने आपको आशीर्वाद देना चाहा, तो इसने आपको एक शिक्षक दिया। मुझे लगता है, यह सब बताता है कि वो शिक्षक ही होते हैं जो जीवन के हर कदम पर हमें सही राह दिखाते हैं। स्कूली के शुरुआती दिनों में हम उन्हें गंभीरता से नहीं लेते हैं। समय के साथ, हम शिक्षकों के प्रयासों और योगदान को समझने लगते है। शिक्षक राष्ट्र निर्माता होते हैं। शिक्षक चरित्र निर्माता होते हैं। उनकी भूमिका प्रकृति में दिव्य है। उनकी भक्ति अतुलनीय है। शिक्षक मोमबत्ती की तरह होते हैं, जो हमें रास्ता दिखाने के लिए खुद खो जाते हैं। यह शिक्षाओं को सलाम करने का अवसर है। हमारे बड़े होने के वर्षों को हमेशा शिक्षकों द्वारा निर्देशित किया गया है। शिक्षक हमें आसमान छूने में मदद करते हैं। उनकी कड़ी मेहनत और समर्पण ही वे उपकरण हैं जिन्होंने हमें न केवल सपने देखने बल्कि उन सपनों को पूरा करने में भी मदद की है। इसलिए, मैं डॉन राथर को उद्धृत करना चाहूंगाः ठसपना एक शिक्षक के साथ शुरू होता है जो आप पर विश्वास करता है, जो आपको धक्का देता है और अगले पठार तक ले जाता है, कभी-कभी आपको सत्य नामक एक तेज छड़ी के साथ पोक करता है।ठ शिक्षक हमारी कल्पना को प्रज्वलित करते हैं और हमें सपने देखने में मदद करते हैं। आज का दिन उन सभी शिक्षाओं को याद करने का है जिन्होंने हमारे विकास, कल्याण और अच्छे जीवन में योगदान दिया है। मैं अपने माता-पिता के बाद शिक्षकों को हमारे गंतव्यों को निर्धारित करने के लिए महत्वपूर्ण व्यक्ति मानता हूं। हेनरी ब्रूक्स एडम्स ने एक बार कहा था कि एक शिक्षक अनंत काल को प्रभावित करता है, वह कभी नहीं बता सकता कि उसका प्रभाव कहां रुकता है। शिक्षकों के संपर्क में रहने से आप केवल उनकी बुद्धिमता से समृद्ध होने वाले हैं। बदले में, शिक्षक कभी-कभार फोन या ई-मेल पर बात करने की मार्मिक उपस्थिति से अभिभूत होंगे। आइए हम सभी शिक्षक दिवस नामक इस महत्वपूर्ण दिन पर अपने शिक्षकों के साथ अपने संबंधों को नवीनीकृत करने का प्रयास करें। हम में से अधिकांश अपने शिक्षकों के बीच छात्रों के रूप में पूरा करने वाले कार्यकाल को स्पष्ट रूप से याद करते हैं। केवल उनका स्मरण ही हमें अभिभूत करता है और हमें आनंदित करता है। शिक्षकों की मदद से कई करियर बनाए गए है। आज पूरी श्रद्धा और समर्पण से शिक्षकों को धन्यवाद कहने का एक शुभ और महत्वपूर्ण अवसर है जिन्होंने हमें सफलता प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करने में मदद की है। शिक्षक का पेशा सबसे महान पेशा होने के कारण हममें से प्रत्येक को जीवन में नई ऊंचाइयों को छूने में मदद मिली। शिक्षकों ने हमें जो पाठ पढ़ाया है, वे समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं और वे हमेशा हमारे साथ हैं। शिक्षकों ने हमारे जीवन में सभी बदलाव किए हैं। हम सब कुछ उनके कर्जदार हैं। हम उन्हें अपने जीवनकाल में पर्याप्त रूप से चुका नहीं सकते हैं। ईश्वर उन्हें खुश रखे।

बर्खास्त अपर शोध अधिकारी सीएचसी में कर रहा ड्यूटी डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने की थी कार्रवाई

(आधुनिक मसाचार सेवा)

प्रयागराज। जाली अभिलेखों के आधार पर नौकरी करने के आरोप में बर्खास्त किया गया अपर शोध अधिकारी मंगलवार 6 सितंबर को भी ड्यूटी पर नजर आया त् प्रतापगढ़ के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अमरगढ़ में तैनात था। दैनिक जागरण टीम अभी वहां पहुंची तो वह अपनी सीट पर बैठकर फाइलों में तल्लीन नजर आया त् उस पर हुई कार्रवाई के बारे में न उसे पता है और न ही वहां के अधीक्षक को ही इसकी जानकारी हैत् कौशांबी के सरसवा स्वास्थ्य केंद्र पर तैनाती के आधार पर डिप्टी सीएम बृजेश पाठक ने उसे बर्खास्त कर दिया है, लेकिन इस बात की जानकारी प्रतापगढ़ में विभाग के पास नहीं है 1988 से है तैनात : श्रवण कुमार

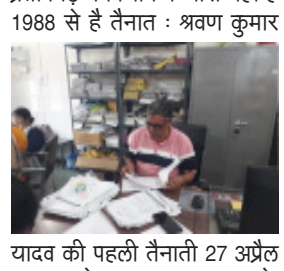

यादव की पहली तैनाती 27 अप्रैल 1988 को बहराइच जनपद के मल्हीपुर स्वास्थ्य केंद्र में हुई थी त् उसके बाद प्रयागराज, कौशांबी, बांदा, अमेठी और फिर जुलाई 2022 में अमरगढ़ में तैनात हुआ था प्रयागराज का है निवासी : मूल रूप से प्रयागराज के अल्लापुर मोहल?ले का रहने वाला श्रवण कुमार अपने ऊपर हुई कार्रवाई से अनजान है त् फोटो खींचे जाने लगी तो वह थोड़ा असहज हुआ लेकिन अपनी सीट पर जमा रहात्अमरगढ़ सीएचसी अधीक्षक बोले, हमें नहीं पता : अमरगढ़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक डा. पंकज कुमार का कहना है कि उनको श्रवण कुमार पर हुई किसी कार्रवाई की जानकारी नहीं दी गई है त् उच्च अधिकारियों का निर्देश आने के बाद कोई कदम उठाया जा सकता है।

अध्यापक छात्रों को अच्छी शिक्षा दे करें सर्वांगीण विकास -जिलाधिकारी

(आधुनिक मसाचार सेवा)

प्रतापगढ़। शिक्षक दिवस के अवसर पर जिला बेसिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वाधान में क्षेत्रीय ग्राम्य विकास संस्थान अफीम कोठी के सभागार में भव्यता के साथ शिक्षक दिवस मनाया गाया। कार्यक्रम में विधायक सदर राजेन्द्र कुमार मौर्य, विधायक विश्वनाथगंज जीत लाल पटेल, विधायक रानीगंज डा0 आर0के0 वर्मा, जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल, मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, पूर्व विधायक हरि प्रताप सिंह, सांसद प्रतिनिधि विवेक उपाध्याय सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों द्वारा बेसिक शिक्षा विभाग उ0प्रा0वि0 कटरा गुलाब सिंह के सहायक अध्यापक मो0 फरहीम, सत्येन्द्र बहादुर सिंह जू0हा0राजापुर बिन्धन के सहायक अध्यापक आलोक कुमार सिंह, संविलियन विद्यालय धीनापुर प्रधानाध्यापक वंश बहादुर यादव, संविलियन विद्यालय मानधाता द्वितीय के सहायक अध्यापक अखिलेश चन्द्र पाण्डेय, प्रा0वि0 ढेकाही के प्रध्यानाध्यापक चन्द्रमणि तिवारी, संविलियन विद्यालय शंकर दयाल के प्रधानाध्यापक खुर्शीद अली, प्रा0वि0 कटकावली के प्रधानाध्यापक प्रतिभा पाण्डेय, प्रा0वि0 रामपुर प्रान के सहायक अध्यापक अंजनी कुमार सिंह व उच्च प्रा0वि0 नरहरपट्टी के सहायक अध्यापक आशुतोष तथा माध्यमिक शिक्षा विभाग के कृष्ण पाल सिंह इण्टर कालेज अर्जुनपुर की प्रधानाचार्या सुमन सिंह, साकेत गर्ल्स इण्टर कालेज दहिलामऊ की प्रधानाचार्या मीना सिंह एवं चन्द्रगुप्त मौर्य इण्टर कालेज मानिकपुर के प्रधानाचार्य श्रीराम पाल को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने जनपद के समस्त शिक्षकों को बधाई देते हुये उनका आवाहन किया कि छात्रों के हित में उनको अच्छी से अच्छी शिक्षा प्रदान कर उन्हें योग्य नागरिक बनाये, उनका सर्वांगीण विकास करें, उनमें परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति संवेदना के भाव प्रकट करना सिखायें और साथ ही साथ आने वाले समय के राष्ट्र निर्माता के रूप में उन्हें तैयार करें। शिक्षक राष्ट्र निर्माण का कार्य करते है उनका दर्जा सवीच्च है। उन्होने कहा कि सभी के द्वारा पूरी ईमानदारी व निष्ठा के साथ अपने कार्य को सम्पादित कर अपने स्कूल, कालेज व समाज को आगे ले जाने में अपनी भूमिका का निर्वहन किया जाये। विद्यालय में शिक्षक समय से पहुॅचे एवं शिक्षण कार्य गुणवत्ता पूर्ण हो। शिक्षक दिवस के अवसर पर विधायक सदर राजेन्द्र कुमार मौर्य, विधायक विश्वनाथगंज जीत लाल पटेल, विधायक रानीगंज डा0 आर0के0 वर्मा, मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया ने शिक्षक दिवस के अवसर पर अपने-अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदानन्द, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेन्द्र सिंह, प्राचार्य अफीम कोठी शिव प्रकाश, सह जिला विद्यालय निरीक्षक एसपी द्विवेदी सहित डा0 विन्ध्याचल सिंह, धर्मेन्द्र ओझा, रामकुमार सिंह, सुशील कुमार सिंह एवं माध्यमिक एवं बेसिक शिक्षा विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डा0 मो0अनीस ने किया।

अब बापूधाम एक्सप्रेस रुकेगी सिसवां बाजार स्टेशनःकेन्द्रीय मंत्री ने हरीझंडी दिखाकर किया ट्रेन को रवाना

(आधुनिक मसाचार सेवा)
वाराणसी। रेलवे प्रशासन द्वारा यात्री जनता की सुविधा हेतु गाड़ी सं0 12538/12537 बनारस - मुजफ्फरपुर-बनारस बापूधाम एक्सप्रेस को छः माह के लिए प्रायोगिक आधार पर हराव 5 सितम्बर 2022 से अगली सूचना

तक सिसवां बाजार स्टेशन पर दिया जा रहा है। इस ट्रेन की हराव हो जाने से वहा क्षेत्र की आम जनमानस मेरे हर्ष व्याप्त है। इस अवसर पर आज सिसवां बाजार स्टेशन पर आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री,भारत सरकार श्री पंकज चौधरी के कर कमलों द्वारा गाड़ी सं0 12538 बनारस-मुजफ्फरपुर बापूधाम एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस अवसर पर आयोजित उद्घघाटन समारोह में केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री पंकज चौधरी ने अपने सम्बोधन में बापूधाम एक्सप्रेस को महाराजगंज के सिसवां बाजार स्टेशन पर ठहराव देने के लिए रेल प्रशासन का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा इसके पूर्व यह गाड़ी महाराजगंज जिले से गुजरती थी किन्तु जिले के किसी भी स्टेशन पर इसका ठहराव नहीं था। महाराजगंज जिले के सिसवां बाजार स्टेशन पर बापूधाम के ठहराव से न सिर्फ सिसवां बाजार के निवासियों को सुविधा होगी बल्कि महाराजगंज जिले के 20 लाख लोगों को भी अब बनारस,गोरखपुर,मोतिहारी एवं मुजफ्फरपुर जाने-आने में बहुत सुविधा होगी। विशेष रूप से महाराजगंज से इलाज, शिक्षा एवं व्यापार के लिए उक्त महानगरों में जाने वाले यात्रियों को इसका पूरा लाभ मिलेगा जिसके सकारात्मक परिणाम भविष्य में परिलक्षित होंगे। इसके पूर्व अतिथियों का स्वागत करते हुए अपर मण्डल रेल प्रबन्धक (आपरेशन) एस0पी0 एस0 यादव ने बताया की यात्रियों की माँग एवं महाराजगंज के माननीय सांसद एवं केन्द्रीय वित्त राज्य मंत्री के प्रयासों के परिणाम स्वरूप रेल प्रशासन ने यात्रियों की सुविधा हेतु गाड़ी सं0 12538 बनारस-मुजफ्फरपुर बापूधाम एक्सप्रेस को महाराजगंज जिले के सिसवां बाजार स्टेशन पर दो मिनट का ठहराव प्रदान किये जाने की स्वीकृति प्रदान की है। उन्होंने बताया की 05.09.2022 से अगली सुचना तक गाड़ी सं0 12538 बनारस-मुजफ्फरपुर बापूधाम एक्सप्रेस गोरखपुर से रवाना होकर 13:00 बजे सिसवां बाजार स्टेशन पहुँचेगी और दो मिनट के हराव के बाद 13:02 बजे मुजफ्फरपुर के लिए रवाना होगी। इसी क्रम में 06.09.2022 से अगली सुचना तक गाड़ी सं0 12537 मुजफ्फरपुर-बनारस बापूधाम एक्सप्रेस बगहाँ से रवाना होकर 00:25 बजे सिसवां बाज़ार पहुँचेगी और दो मिनट हराव के पश्चात 00:27 बजे बनारस के लिए रवाना होगी। उन्होंने बताया इस गाड़ी के राव से सिसवां बाज़ार समेत आस-पास की जनता को भी मुजफ्फरपुर, बनारस एवं गोरखपुर महानगरों तक सीधी यात्रा का लाभ मिलेगा ।अशोक कुमार जन सम्पर्क अधिकारी वाराणसी के अनुसार इस अवसर पर अपर मण्डल रेल प्रबन्धक (आपरेशन) श्री एस पी एस यादव, सहायक मण्डल वाणिज्य प्रबन्धक श्री अजय कुमार सुमन, सहायक मण्डल इंजीनियर श्री ऋषि श्रीवास्तव समेत रेलवे अधिकारी कर्मचारी तथा भारी संख्या में क्षेत्रीय जनता उपस्थित रहे।

पूर्वोत्तर रेलवे के महाप्रबंधक ने डीआरएम संग विकास कार्यो का गहन निरीक्षण कर प्रगती का किया समीक्षा

(आधुनिक मसाचार सेवा)
वाराणसी। पूर्वोत्तर महाप्रबन्धक अशोक कुमार मिश्र ने मण्डल रेल प्रबंधक वाराणसी रामाश्रय पाण्डेय के संग व मुख्य परियोजना प्रबंधक विकास चन्द्रा के साथ निरीक्षण स्पेशल ट्रेन से प्रयागराज रामबाग-बनारस के निरीक्षण हेतु पूर्वाह्न प्रयागराज रामबाग पहुँचे।इस निरीक्षण के दौरान रेल खण्ड पर गाड़ियों की रफ्तार बढ़ाने के प्रयोग हेतु महाप्रबंधक ने अपनी स्पेशल ट्रेन से ज्ञानपुर रोड से बनारस तक 120 किमी घंटा गति से स्पीड ट्रायल किया । इस दौरान महाप्रबन्धक पूर्वोत्तर रेलवे अशोक कुमार मिश्र ने प्रयागराज रामबाग-बनारस के निरीक्षण के क्रम में सबसे पहले उन्होंने प्रयागराज रामबाग स्टेशन पर दोहरीकरण हेतु यार्ड रिमॉडलिंग,प्लेटफार्मों के सुधार कार्य,पैदल उपरिगामी पुल, रिमाडलिंग प्लान,गार्ड लोको रनिंग रुम व स्टेशन पर उपलब्ध यात्री सुख-सुविधाओं का गहन निरीक्षण किया। तदुपरान्त वे अपनी निरीक्षण स्पेशल ट्रेन से रेलवे ट्रैक का विन्डो ट्रेलिंग निरीक्षण करते हुए झूँसी स्टेशन पहुँचे और झूँसी रेलवे स्टेशन पर विद्युतीकृत दोहरी लाइन के निर्माण हेतु यार्ड रिमॉडलिंग,प्लेटफार्मों के उनन्यन एवं विस्तार कार्य,पैदल उपरिगामी पुल, रिमाडलिंग प्लान के अनुरूप स्थलीय निरीक्षण कर विकास कार्यों की प्रगती की समीक्षा की तथा स्टेशन पर उपलब्ध यात्री सुख-सुविधाओं का निरीक्षण कर सम्बंधित को दिशा निर्देश दिया। महाप्रबन्धक पूर्वोत्तर रेलवे श्री अशोक कुमार

मिश्र ने प्रयागराज रामबाग-बनारस के निरीक्षण के क्रम में सबसे पहले उन्होंने प्रयागराज रामबाग स्टेशन पर दोहरीकरण हेतु यार्ड रिमॉडलिंग ,प्लेटफार्मों के सुधार कार्य,पैदल उपरिगामी पुल, रिमाडलिंग प्लान, गार्ड लोको रनिंग रुम तथा स्टेशन पर उपलब्ध यात्री सुख-सुविधाओं का गहन निरीक्षण किया। तदुपरान्त वे अपनी निरीक्षण स्पेशल ट्रेन से रेलवे ट्रैक का विन्डो ट्रेलिंग निरीक्षण करते हुए झूँसी स्टेशन पहुँचे और झूँसी रेलवे स्टेशन पर विद्युतीकृत दोहरी लाइन के निर्माण हेतु यार्ड रिमॉडलिंग,प्लेटफार्मों के उनन्यन एवं विस्तार कार्य,पैदल उपरिगामी पुल, रिमाडलिंग प्लान के अनुरूप स्थलीय निरीक्षण कर विकास कार्यों की प्रगती की समीक्षा की तथा स्टेशन पर उपलब्ध यात्री सुख-सुविधाओं का निरीक्षण कर सम्बंधित को दिशा निर्देश दिया। इसके उपरान्त महाप्रबन्धक पूर्वोत्तर रेलवे मिश्र निरीक्षण के क्रम में प्रयागराज रामबाग-बनारस रेल खण्ड पर झूँसी एवं रामनाथपुर के मध्य किमी 315 से 317 तक कर्वेचर संख्या 11 के इन्डेन्ट का निरीक्षण समेत ट्रैक एवं बैलास्ट का परीक्षण किया और संबंधित को निर्देश दिया । इसके बाद उन्होंने रामनाथपुर एवं हँड़िया के मध्य किमी सं 305/1 पर स्थित समपार फटक संख्या 60 स्पेशल का संरक्षा निरीक्षण किया और बूम लॉकिंग से लेकर चाभियों के आदान-प्रदान तक कार्यप्रणाली में नियमों का पालन सुनिश्चित किया।इसके पश्चात महाप्रबंधक अपने निरीक्षण स्पेशल ट्रेन से रेलवे ट्रैक का विन्डो ट्रेलिंग निरीक्षण करते हुए हँड़िया खास रेलवे स्टेशन पहुँचे और स्टेशन का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने प्लेटफार्म, वाटर बूथ,स्टेशन पैनल,बुकिंग काउंटर, स्टेशन भवन एवं सर्कुलेटिंगएरिया एवं यात्री सुविधाओं का निरीक्षण किया तथा साफ-सफाई एवं रख-रखाव के संबंध में निर्देश दिया। इसी क्रम में महाप्रबंधक विण्डो ट्रेलिंग निरीक्षण करते हुए ज्ञानपुर रोड स्टेशन पहुँचे जहाँ उन्होंने प्लेटफार्म सं-1,3 एवं 04,वाटर बूथ,स्टेशन पैनल,यात्री आरक्षण काउंटर,स्टेशन भवन एवं सर्कुलेटिंग एरिया एवं यात्री सुविधाओं का निरीक्षण किया तथा साफ-सफाई के विषय में सम्बंधित को निर्देश दिया। अपने निरीक्षण के दौरान श्री मिश्र ने पारिचलनिक सुगमता व रेलवे नेटवर्क की आधारभूत संरचना के विकास की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण दोहरीकरण प्रोजेक्ट पर, रेल विकास निगम लिमिटेड के वरिष्ठ अधिकारियों को इसे निर्धारित समय सीमा मे गुणवत्ता के उच्चतम मानकों के अनुरूप पूर्ण करने के निर्देश दिए। जिससे प्रयागराज रामबाग-बनारस रेल खण्ड पर ट्रेनों की परिचालनिक क्षमता वृद्धि तथा समय पालन में सुधार लाया जा सके। निरीक्षण के इस अवसर पर वरिष्ठ उप महाप्रबन्धक डी0के0सिंह, प्रमुख मुख्य इंजीनियर सी0पी0 गुप्ता, प्रमुख मुख्य विद्युत इंजीनियर ए0के0 शुक्ला, प्रमुख मुख्य सिगनल व दूरसंचार इंजीनियर अनिल कुमार मिश्रा, प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबन्धक संजय त्रिपाठी,प्रमुख मुख्य वाणिज्य प्रबंधक संजय मिश्रा, मुख्य विद्युत लोको इंजीनियर अनुराग कुमार गुप्ता, मुख्य जनसंपर्क अधिकारी पंकज सिंह,अपर मंडल रेल प्रबंधक राहुल श्रीवास्तव समेत प्रमुख विभागाध्यक्ष एवं अन्य वरिष्ठ रेल अधिकारी उपस्थित थे। उज्ञातव्य हो की बनारस से हंडिया खास खंड को पहले ही चालू कर दिया गया है और हंडिया खास से रामनाथपुर तक के खंड की कुल लंबाई 18.3 किमी है जिसके निरीक्षण एवं ओपनिंग के उपरांत बनारस-प्रयागराज रामबाग के मध्य 121 कि0मी0 रेल खण्ड पर चल रही दोहरीकरण सह विद्युतीकरण परियोजना के अंतर्गत बनारस से रामनाथपुर 114 कि0मी0का दोहरीकरण सहविद्युतीकरण कार्य सम्पन्न हो गया है।

बलिया मे शिक्षक दिवस सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए मंत्री दयाशंकर सिंह

(आधुनिक मसाचार सेवा)
बलिया। शिक्षक दिवस के अवसर पर कलेक्ट्रेट सभागार में 'शिक्षक दिवस सम्मान समारोह' का आयोजन हुआ। राज्य पुरस्कार के लिए चयनित शिक्षिका निर्मला गुप्ता के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य करने वाले जनपद के प्राथमिक विद्यालय अलावलपुर हनुमानगंज के लोकप्रिय प्रधानाध्यापक प्रदीप कुमार यादव सहित 44 शिक्षकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि परिवहन

मंत्री दयाशंकर सिंह ने किया। इसके बाद सांसद नीरज शेखर के साथ शिक्षकों को प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया।इस दौरान मंत्री दयाशंकर सिंह ने राज्य स्तर पर पुरस्कार प्राप्त करने वाले तीनों अध्यापकों को बधाई का पात्र और अन्य अध्यापकों के लिए प्रेरणास्रोत बताया। उन्होंने कहा राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त करने वाली शिक्षिका निर्मला गुप्ता की चुनौतियों भरी कहानी प्रेरित करती है कि अभाव व सीमित संसाधनों में भी बेहतर से बेहतर किया जा सकता है। ब्रिटिश हुकूमत के समय के ऑक्सफोर्ड की कहानी साझा करते हुए कहा कि शिक्षक से बड़ा कोई नहीं होता है। माता-पिता के बाद शिक्षक ही सिर्फ ऐसा व्यक्ति होता है, जो यह चाहता है कि उसका शिष्य उससे भी आगे और सफलता की बुलंदियों पर जाए। निर्मला जी के विद्यालय पर जो भी कमी होगी, उसे दूर कराया जाएगा। इसके लिए अपनी निधि के अलावा सीएसआर फंड से धन दिलवाने का भी आश्वासन दिया। उस विद्यालय को एक मॉडल व आदर्श विद्यालय बनाने की दिशा में प्रयास करने का निर्देश बीएसए को दिया। राज्यसभा सांसद नीरज शेखर ने सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी को नमन करते हुए इस बात पर विशेष बल दिया कि सभी अध्यापक अपने दायित्वों को समझें और उसका निर्वहन ईमानदारी से करें।माँ को समर्पित किया सम्मान पुरस्कार प्राप्त करने के बाद शिक्षिका निर्मला गुप्ता ने कहा कि इस सम्मान से निश्चित रूप से मेरा उत्साह बढ़ा है। अपनी मां को यह सम्मान समर्पित करते हुए कहा कि हमारी माँ ने घर से विरोध कर मुझे पढ़ाया-लिखाया। उच्च शिक्षा तक ग्रहण करने में हर क्षण मदद की। इंटर की पढ़ाई के दौरान शादी हो गयी। उसके बाद तमाम प्रतिकूल परिस्थिति आयी, पर मैं हिम्मत नहीं हारी। अपनी पढ़ाई जारी रखी। 2006 में शिक्षिका होने के बाद से बच्चों के प्रति पूरी तरह समर्पित रही। भवन व अन्य कई प्रकार की समस्या आयी, पर सीमित संसाधनों के बीच ही पढ़ाई के अलावा खेलकूद, कौशल विकास व नए-नए शिक्षण विधियों का माध्यम से बच्चों को स्मार्ट बनाने का प्रयास की। अंत में समस्त अध्यापकों को सन्देश दिया कि राष्ट्र के कर्णधार बच्चों के कर्णधार बनें,उनके भविष्य को संवारने के प्रयास पूरी ईमानदारी से करें।सीएम से कार्यक्रम का हुआ सीधा प्रसारण शिक्षक दिवस के अवसर पर लखनऊ में आयोजित मुख्यमंत्री के कार्यक्रम का भी सीधा प्रसारण दिखाया गया। मंत्री दयाशंकर सिंह, राज्यसभा सांसद नीरज शेखर समेत मौजूद सभी जनप्रतिनिधियों,अधिकारियों व शिक्षकों ने कार्यक्रम को देखा और मुख्यमंत्री जी के सम्बोधन को सुना। इस अवसर पर डीआईओएस रमेश सिंह,बीएसए मनीराम सिंह, लेखाधिकारी हिमांचल यादव,बीईओ डीपी सिंह, राकेश सिंह, माधवेन्द्र पांडेय, रतन्शंकर पांडेय, अनूप गुप्ता, हिमांशु मिश्र, जिला समन्वयक सौरभ गुप्ता व ओपी सिंह, सौरभ गुप्ता, ज्योति प्रकाश चौहान, अभिषेक सिंह, प्राथमिक शिक्षक संघ जिलाध्यक्ष जितेंद सिंह, शिक्षामित्र संगठन के पंकज सिंह व अखिलेश सिंह, अजय मिश्र,विद्यासागर दूबे आदि मौजूद थे। संचालन राजेश पांडेय ने किया।

बलिया मे गोपाल आईटीआई ने प्राइज मनी दौड़ प्रतियोगिता का किया आयोजन

(आधुनिक मसाचार सेवा)
बलिया। जिले के जीराबस्ती मे गोपाल आईटीआई के सौजन्य से प्राइज मनी दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 375 लड़वे और लड़कियों ने भाग लिया कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष अनिल सिंह विशिष्ट अतिथि आप पार्टी के वरिष्ठ नेता अजय राय उर्फ मुनन थे। हरि झंडी दिखाकर किया इस दौड़ प्रतियोगिता में पुरुष का पांच किलोमीटर व महिला की तीन किलोमीटर की दौड़ हुई। महिला में प्रथम संध्या यादव द्वितीय नेहा यादव तृतीय ज्योति वहीं पुरुष में प्रथम मनीष यादव वाराणसी रितिक अभिषेक पासवान ने बाजी मारी कार्यक्रम के आयोजक धर्मेंद्र कुमार तिवारी उर्फ डुलडुल ने सभी दौड़ प्रतियोगिता में भाग लिए पुरुष और महिलाओं के साथ उपस्थित सम्मानित जनता का अभिनंदन किया इस कार्यक्रम में उपस्थित सम्मानित लोगों को कार्यक्रम के आयोजक वे द्वारा जिला पंचायत सदस्य उपेंद्र गौड़ पूर्व प्रधान भोला राय टाइगर तिवारी श्वेता राय विभा पांडेय अखिल नंद तिवारी पटखौली प्रधान रामायण यादव व्यापार मंडल अध्यक्ष मूलचंद गुप्ता अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम को सफल बनाने में कुनाल सिंह शेषनाथ राय गामा पांडे मंटु पांडेय मंटु उपाध्याय रीतेश तिवारी दया श्रीवास्तव दया वर्मा सुबोध सहित काफी संख्या मे लोग उपस्थित रहे।

प्रवेश सूचना

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

(आई0 एस0 ओ0 प्रमाणित औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र)

भारत सरकार की कौशल विकास योजना मे समस्त, 2022 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते है। ट्रेड प्रवेश योग्यता तथ प्रस्तुत विविण पाठ्यक्रर्मो की अवधि के विवरण नीचे दिए गए है।

क्र0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा (कम्प्यूटर ऑपरेटर)	1 वर्ष	12वी पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वी पास
3.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वी पास
4.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वी पास
5.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वी पास
6.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वी पास
7.	सर्टिफिकेट इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वी पास
8.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वी पास
09.	रेफ्रिरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वी पास
10.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वी पास
11.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वी पास
12.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वी पास

प्रस्तुत विभन्न पाठ्क्रमों में रिक्त की उपलब्धता तथा दाखिला शुल्क का विवरण संस्थान की वेबसाइट पर देखे।

1. **प्रमाण पत्रः** सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय ट्रेड प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो सेवा में भर्ती के लिए मान्य योग्यता है।
2. **चयन की प्रक्रियाः** इस वर्ष कोविड–19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ पहले पाओं के आधार पर किये जायेगे।
3. **आयुः** उम्मीदवार की आयु 1 अगस्त, 2022 को न्यूनतम 14 वर्ष या उससे अधिक होनी चाहिए।
4. **आवेदन कैसे करेः** ओवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सक्ता है।
   नोटः आवेदन फार्म भरते हुए रू 2665 का पंजीकरण शुल्क भी (अप्रतिदेय) होगा।
5. **बस पासः** सरकार द्वारा विद्यार्थियों के लिए प्रति माह में रियायती एसी बस पास सुविधा उपलब्ध है, जो कि सभी बसों में मान्य है।
6. **छात्रवृत्तिः** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिसके पास आय प्रमाण पत्र हो, वो भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है।
7. अधिक जानकारी तथा ऑनलाइन आवेदन के लिए संस्थान की वेबसाइट www,nainiiti.com देखें।
8. दाखिले की अंतिम तिथिः 15 सितंबर 2022
9. सफल अभ्यार्थियों को भारत सरकार द्वारा रू 7700 प्रति माह की अप्रेंटिसशिप सुविधा उपल्बध है।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

सम्पर्क सूत्रः– 7518828710, , 9415608710, 6386474074, 9415608790

थाना विन्ध्याचल अन्तर्गत अष्टभुजा पहाड़ी के नीचे हुई घटना का मुख्य आरोपी 50 हजार का ईनामिया गिरफ्तार, घटना में प्रयुक्त अवैध पिस्टल बरामद

(आधुनिक मसाचार सेवा)

मीरजापुर। दिनांक 14.08.2022 को थाना विन्ध्याचल अन्तर्गत अष्टभुजा पहाड़ी के नीचे हुई घटना के सम्बन्ध में थाना विन्ध्याचल, जनपद मीरजापुर पर दिनांकः 15.08.2022 को वादी धनजी पासवान पुत्र स्व0 प्यारी पासवान निवासी ब्रह्मपुर थाना ब्रह्मपुर जनपद बक्सर, बिहार द्वारा लिखित तहरीर बावत अष्टभुजा पहाड़ी के नीचे मैदान में खाना बनाते समय हुए विवाद के दौरान कन्हैया प्रसाद की गोली मार दी गई थी, जिसकी इलाज के दौरान मृत्यु हो गई थी। जिसके सम्बन्ध में थाना विन्ध्याचल पर पंजीकृत मु0अ0सं0-147/2022 धारा 302,102बी,147,148,149,504,506 भादवि व 7 सीएलए एक्टसे सम्बन्धित 07 नफर अभियुक्तों को पूर्व में गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है जबकि मुख्य आरोपी घटना के बाद से लगातार फरार चल रहा था जिसकी गिरफ्तारी हेतु 50 हजार का ईनाम भी घोषित किया गया था। पुलिस अधीक्षक मीरजापुर 'संतोष कुमार मिश्रा' द्वारा मुकदमा उपरोक्त से सम्बन्धित फरार चल रहे मुख्य आरोपी ? 50 हजार के ईनामिया की यथाशीघ्र गिरफ्तारी हेतु अपर पुलिस अधीक्षक नगर के नेतृत्व में टीम गठित कर क्षेत्राधिकारी नगर व प्रभारी निरीक्षक विन्ध्याचल को निर्देश दिए गए थे। उक्त निर्देश के अनुक्रम में आज दिनांकः 05.09.2022 को प्रभारी निरीक्षक

विन्ध्याचल विनीत राय, प्रभारी एसओजी सत्येन्द्र कुमार यादव व स्वाट प्रभारी राजेश जी चौबे मय पुलिस टीम द्वारा फरार मुख्य आरोपी नन्दगोपाल पाण्डेय उर्फ फौजी पुत्र स्व0 रामजी पाण्डेय निवासी जोगया थाना विक्रमगंज जनपद रोहतास, बिहार को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त की निशानदेही पर घटना में प्रयुक्त अवैध पिस्टल .32 बोर बरामद कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है। **विवरण पूछताछ–** गिरफ्तार मुख्य आरोपी नन्दगोपाल पाण्डेय उर्फ फौजी ने पूछताछ में बताया कि कुछ दिन पहले विन्ध्याचल अपने अन्य साथियों के साथ आया था। हम सभी अष्टभुजा पहाड़ी के नीचे मैदान में खाना बना रहे थे कि इसी दौरान कुछ लोगो से वाद-विवाद हो गया और मैं गुस्से में आकर अपने साथियों के सह पर एक व्यक्ति को गोली मार दिया था तथा गिरफ्तारी के डर से हम सभी मौके से फरार हो गये थे। **नाम पता गिरफ्तार अभियुक्त–** नन्दगोपाल पाण्डेय उर्फ फौजी पुत्र स्व0 रामजी पाण्डेय निवासी जोगया थाना विक्रमगंज जनपद रोहतास, बिहार। **विवरण बरामदगी –** घटना में प्रयुक्त अवैध पिस्टल .32 बोर। **पंजीकृत अभियोग–** मु0अ0सं0-147/2022 302,120बी,147,148,149,504,506 भादवि, 7 सीएलए एक्ट व 3/25 आर्म्स एक्ट **आपराधिक इतिहास-** 1-मु0अ0सं0-157/88 धारा 392 भादवि थाना विक्रमगंज जनपद रोहतास बिहार 2-मु0अ0सं0- 92/91 धारा 392 भादवि थाना विक्रमगंज जनपद रोहतास बिहार 3-मु0अ0सं0- 108/2001 धारा 384 भादवि थाना सासाराम 4-मु0अ0सं0- 18/91 धारा 234/225/307/353 भादवि व 27 आर्म्स एक्ट थाना सासाराम **गिरफ्तारी व बरामदगी करने वाली पुलिस टीम–** 1-प्रभारी निरीक्षक विन्ध्याचल-विनीत राय मय टीम। 2-प्रभारी निरीक्षक एसओजी टीम-सत्येन्द्र कुमार यादव मय टीम। 3-प्रभारी स्वाट टीम- राजेश जी चौबे मय टीम। पुलिस अधीक्षक मीरजापुर द्वारा पुलिस टीम को ? 20 हजार के पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

आपराधिक प्रवृत्ति के शातिर हत्यारे को पुलिस ने किया गिरफ्तार

(आधुनिक मसाचार सेवा)

चोपन/ सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन एवं अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय व क्षेत्राधिकारी नगर के पर्यवेक्षण एवं प्रभारी निरीक्षक चोपन के कुशल नेतृत्व में अपराध एवं अपराधियों पर प्रभावी अंकुश लगाये जाने हेतु चलाये जा रहे अभियान के अन्तर्गत थाना चोपन पुलिस के अथक प्रयास से सोमवार को वैष्णो मन्दिर डाला से हत्या का आरोपी गिरफ्तार कर मा 0 न्यायालय भेजा जा रहा है। मिली जानकारी के मुताबिक पुलिस घटना का त्वरित संक्षिप्त विवरण दिनांक 31.08.2022 को समय करीब 11.30 बजे जरिये इंन्न् सूचना प्राप्त हुई की एक मृतक व्यक्ति का शव चोपन गांव में गौशाला से कुछ दूर टीले / खेत मे पड़ा है। इस सूचना पर मौके पर थाना स्थानीय की पुलिस पुहँची। मृतक व्यक्ति की पहचान रविशंकर गोड पुत्र स्व 0 राजेन्द्र गोड निवासी चोपन गांव थाना चोपन सोनभद्र उम्र करीब 35 वर्ष के रूप में की गई। मौके पर उपस्थित गांव वालों के समक्ष मृतक के पतिन्फुलेश्वरी की आकस्मिक सूचना के आधार पर मृतक का पंचायत नामा कर पोस्टमार्टम की कार्यवाही पूर्ण की गयी। पांच सितंबर को प्रातः 08.30 बजे मृतक के भाई कमलेश कुमार गोड़ पुत्र स्व 0 राजेन्द्र निवासी चोपन गांव के तहरीरी सूचना प्राप्त हुई। जिसमे आशकां व्यक्त की गयी

है कि मेरे भाई रविशकर की हत्या विनोद वैगा पुत्र शिवनाथ वैगा निवासी बिल्ली मारकुण्डी के द्वारा की गयी है। मुकदमा पंजिकृत करा कर विवेचनात्मक कार्यवाही प्रभारी निरीक्षक चोपन द्वारा प्रारम्भ किया गया। नियमानुसार विवेचना में अन्य कार्यवाही शीघ्र पूर्ण करते हुए मुकदमा उपरोक्त से सम्बन्धित अभियुक्त को गिरफ्तार समय करीब 06:30 बजे गिरफ्तार किया गया। अभियुक्त द्वारा बताया गया कि मैं दिनांक 31 अगस्त को डाला बाजार चला गया था, जब वापस शाम 07: 00 बजे अपने घर वापस आया तो बारिश हो रही थी। अपनी झोपड़ी के बाहर अपनी साईकिल खड़ा किया तो साईकिल की आवाज सुनकर मेरे झोपड़ी के अन्दर बैठे रविशंकर गोड़ व मेरी पतनी उठकर बाहर आये। मैंने रविशकर से पूछा कि जब मैं नहीं रहता हूँ तभी तुम घर में आते हो, मैं रहता हूँ तब तुम क्यों नहीं आते। इस बात पर वह मुझसे हाथापाई करने लगा। मैंने अपनी पतने को डांटा व वही छप्पर मे रखे बांस का बेत / डण्डा को उठा कर जान से मारने की नियत से रविशकर के सर पर जोर से मारा। जिससे वह लड़खड़ता हुआ बाहर निकला व 50-60 / कदम दूर जाकर टीले / खेत में गिर गया। मैंने जाकर देखा तो वह मर चुका था। जिसके उपरांत मु 0 अ 0 सं 0 व धारा जिसमें बरामदगी एवं गिरफ्तारी की गयी- मु 0 अ 0 सं 0 233/2022 धारा 302 भादवि दर्ज किया गया है स्इस दौरान टीम - चोपन थानाध्यक्ष लक्ष्मण पर्वत उ 0 नि 0 नवनीत कुमार चौरसिया, का. योगेश चंद्र मौर्या, का. अर्पित मौर्या शामिल रहे।

हाईकोर्ट की सख्ती के बाद तहसील प्रशासन ने दिखाई तेजी

(आधुनिक मसाचार सेवा)

सोनभद्र। हाईकोर्ट की सख्ती के बाद तहसील प्रशासन ने नगर पालिका राबर्ट्सगंज उर्फ टांड़ का डौर का नया खसरा-खतौनी तैयार करने में तेजी लाई है। काफी हद तक रिकार्ड तैयार भी कर लिया है। जरूरतमंदों को इसका नकल भी दिया जा रहा है। हालांकि कोर्ट में इस बाबत अब तक जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई है। नोटिस जारी होने के बाद अब इसकी प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है। राबर्ट्सगंज में अभी भी जमींदारी कानून लागू है। इसका रिकार्ड नियमित अपडेट करने का निर्देश है। वर्ष 1994 के बाद से यह रिकार्ड अपडेट नहीं किया किया गया था। इस बीच वर्ष 2018 में खसरा रजिस्टर गायब हो गया। सरकारी जमीन पर कब्जे और एक ही भूमि को कई लोगों के बेचे जाने से जमीन विवाद के मामले खूब बढ़े है। खसरा रजिस्टर न होने से इनका समाधान नहीं हो पा रहा। भवन स्वामियों को भूमि स्वामित्व से जुड़े दस्तावेज के अभाव में विभिन्न योजनाओं के लाभ से वंचित होना पड़ रहा है। मामला हाईकोर्ट में पहुंचा तो कोर्ट ने जिला प्रशासन को नया रजिस्टर बनाने का निर्देश दिया। कोर्ट के आदेश के क्रम में तहसील प्रशासन ने खसरा-खतौनी रजिस्टर को काफी हद तक अपडेट कर दिया है और जरूरतमंदों को नकल भी मुहैया कराया जा रहा है।

शिक्षक दिवस विद्यार्थियों का जीवन संवारता है शिक्षक

(आधुनिक मसाचार सेवा)

सोनभद्र। भारत रतन डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती शिक्षक दिवस के रूप में सोमवार को धूमधाम से मनाया। समाज निर्माण में उत्कृष्ट योगदान देने वाले शिक्षकों का सम्मान हुआ। विद्यार्थियों ने भी रोचक तरीके से अपना भविष्य संवारने वाले शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता जाहिर की। गीत-संगीत के जरिए शिक्षकों की महत्ता बताई गई। कलेक्ट्रेट सभागार में डीएम चंद्र विजय सिंह और विधायक अनिल मौर्य ने उत्कृष्ट कार्य करने वाले जिले के चार शिक्षकों को सम्मानित किया। राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान के लिए चुने गए दुरावल खुर्द के प्रधानाध्यापक राजकुमार सिंह, अंग्रेजी में आदर्श पाठ योजना के लिए चयनित उच्च प्राथमिक विद्यालय बिल्ली की सुमन सिंह, गणित की पाठ योजना के लिए प्राथमिक विद्यालय वीर खुर्द के शिवशंकर और सामाजिक विषय की आदर्श पाठ योजना के लिए राज्य स्तर पर चयनित प्राथमिक विद्यालय देवगढ़ के अखिलेश कुमार सिंह को प्रमाण पत्र व स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। इस मौके

पर डायट प्राचार्य विजय शंकर मिश्र, बीएसए हरिवंश कुमार, सभी बीईओ आदि मौजूद रहे। भाजपा जिला कार्यालय पर राष्ट्रपति से पुरस्कृत अर्जुन दास केशरवानी, ओमप्रकाश त्रिपाठी, रमाकांत कुशवाहा, उमाशंकर सिंह, लालचंद्र गुप्ता, राज्यपाल से सम्मानित जनार्दन प्रसाद त्रिपाठी, अंजू जायसवाल, मनीष पटेल को जिलाध्यक्ष अजीत चौबे व अन्य पदाधिकारियों ने अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया। गुरुनानक बालिका इंटर कॉलेज में लायंस क्लब ने 25 शिक्षकों को अंग वस्त्र एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। छात्राओं ने आकर्षक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर कॉलेज के अध्यक्ष जसवीर सिंह, प्रबंधक निरंजन सिंह, प्रधाचार्य कुमार मंगलम, लायंस क्लब के पूर्व मंडलाध्यक्ष हरीश अग्रवाल, किशोरी सिंह, सेक्रेट्री पवन जैन, दया सिंह, जय कुमार केशरी, घनश्याम सिंघल, परमेश जैन, राधिका सिंह आदि मौजूद रहे। ऊंचडीह पंचायत भवन में आयोजित सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि विजय शंकर चतुर्वेदी ने कहा कि शिक्षक कभी भी सेवा मुक्त नहीं होता।

प्रतिष्ठित न्यूज़ एप के नाम से फर्जी ट्विटर अकाउंट बनाकर पुलिस और समाजसेवियों के बारे में जूठा आरोप लगाया जा रहा है

(आधुनिक मसाचार सेवा)

सोनभद्र/शक्तिनगर। सोनभद्र जिले की शक्तिनगर थाना क्षेत्र अंतर्गत प्रतिष्ठित न्यूज़ एप ठपब्लिक न्यूज़ठ के नाम का प्रयोग कर ट्विटर पर फर्जी अकाउंट बनाकर क्षेत्र के समाजसेवियों के बारे में पुलिस को गलत सूचना समेत झूठा आरोप लगाकर यूपी पुलिस समेत आईजी वाराणसी, सोनभद्र पुलिस को ट्वीट किया जा रहा है। साथ ही फर्जी अकाउंट से पुलिस के बारे में गलत लिखने के कारण

अकाउंट बनाकर और जाँच व आवश्यक कार्यवाही के साथ झूठा आरोप लगाकर पत्रकार की भी छवि धूमिल करते जा रहे है,जिससे सभी पत्रकार साथी घोर निंदा कर रहे हैं। सभी पत्रकारों ने मिलकर शक्तिनगर एण्ड् राजेश सिंह को ज्ञापन देकर मांग की है कि उक्त फर्जी अकाउंट की विधिवत से जांच कराई जाए और दोषी पाने पर उचित कारवाही की जाए।जिससे पत्रकार अपनी सकारात्मक रूप से पत्रकारिता कर पाए।

दुष्कर्म का झूठा केस दर्ज कराने पर महिला सहित तीन गिरफ्तार

(आधुनिक मसाचार सेवा)

अनपरा। यूपी से सटे मध्य प्रदेश के मोरवा थाना क्षेत्र में एक महिला के झूठे दुष्कर्म की कहानी गढ़ने और लोगों से रुपयों की मांग करने

के मामले में सोमवार को पुलिस ने एक महिला को गिरफ्तार कर लिया है। बीते दिनों महिला अपने ही गांव के एक युवक पर खुद को नशीला जूस पिलाकर बेहोश करने और हैदराबाद ले जाकर दुष्कर्म करने की तहरीर मोरवा पुलिस को दी थी। सोमवार को टीआई मनीष त्रिपाठी ने खुलासा करते हुए बताया कि संतुला कुमारी वैश्य ने अपने ही गांव के एक युवक पर अपहरण और दुष्कर्म का झूठा मामला दर्ज करा कर 50 लाख रुपये की मांग कर रही थी। पुलिस की पूछताछ में वह खुद ही अपने जाल में फंस गई और साइबर व अन्य साक्ष्यों के आधार पर उसके झूठ का पर्दाफाश हुआ। महिला व उसके दो सहयोगियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

डीएवी पब्लिक स्कूल खड़िया में आज सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन जी के जन्मदिवस के पावन अवसर पर शिक्षक दिवस सादगी एवं हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया

(आधुनिक मसाचार सेवा)

सोनभद्र/शक्तिनगर। डीएवी पब्लिक स्कूल खडिया में आज सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन जी के जन्मदिवस के पावन अवसर पर शिक्षक दिवस सादगी एवं हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया त् सर्वप्रथम प्राचार्या श्रीमती संध्या एल पांडे जी ने प्रार्थना सभा में अपने शिक्षकों सहित दीप प्रज्वलित कर सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए तथा अपने संदेश में बताया कि गुरु ही हमें अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुआ पंजाबी गीत के माध्यम से कक्षा ग्यारहवीं की छात्राओं ने जहां सबका मन मोहा वही मेरे नसीब में तू नहीं समूह नृत्य के माध्यम से कक्षा बारहवीं की छात्राओं ने अपनी विशेष प्रस्तुति दी जहां कक्षा 12वीं के छात्र नमन श्रीवास्तव द्वारा शिक्षकों के सम्मान में प्रस्तुत गीत तेरे बिना हम रह नहीं सकते ने सभी के मन को भावविभोर किया वही प्रत्यूष द्विवेदी द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रस्तुत कविता अत्यंत प्रभावी रही शिक्षक आनंद मोहन सिंह ने अपने गीत के माध्यम

में ला सकता है मां शिशु की प्रथम गुरु है हमें अपने गुरुजनों का सदैव सम्मान करते हुए उनका आभारी रहना चाहिए तदुपरांत कक्षा 11वीं तथा 12वीं के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया त् जिसमें प्राचार्या श्रीमती संध्या पांडे जी ने अपने शिक्षकों तथा सीनियर छात्रों के साथ केक काटकर सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन किया त् सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा शिक्षक गेम आदि अनेकानेक कार्यक्रमों के बीच से जहाँ सबके मन को आकर्षित किया, वहीं जे के मिश्रा द्वारा प्रस्तुति गीत अत्यंत सराहनीय रहा प्राचार्या श्रीमती संध्या यल पांडेय जी ने इस अवसर पर शिक्षक तथा शिक्षनेतर कर्मचारियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया कार्यक्रम समापन पर हेड बॉय आदित्य प्रताप सिंह ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए अपने गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की तथा सभी के प्रति आभार व्यक्त किया

एनटीपीसी सिंगरौली के सीएसआर ग्रामीण क्वालिटी सर्किल स्तर की महिलाओं की दोनों टीमों ने क्षेत्रीय स्तर क्यूसीएफ़आई में जीता गोल्ड

(आधुनिक मसाचार सेवा)

सोनभद्र/शक्तिनगर। शक्तिनगर, सीएसआर के अंतर्गत ग्रामीण क्वालिटी सर्किल की टीम ठग्राम विकासङ्ग एवं ङ्कमां ज्वालाठ द्वारा दिनांक 04.09.2022 वाराणसी में आयोजित क्षेत्रीय 10वें क्वालिटी सर्किलफोरम ऑफ इंडिया (क्यूसीएफ़आई) में गोल्ड अवार्ड हासिल किया गया। एनटीपीसी सिंगरौली के दोनों टीमें जीता। उन्होंने यह भी कहा कि बालिका सशक्तिकरण, एनटीपीसी सिंगरौली के प्रमुख प्राथमिकताओं में से एक है। महिलाओं को प्रोत्साहन देने हेतु एनटीपीसी सिंगरौली द्वारा विभिन्न योजनाएँ एवं कार्यक्रम निरंतर आयोजित किए जाते है। पूर्व में सीएसआर के तहत बालिका सशक्तिकरण अभियान, रक्षा प्रतिस्पर्धात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम एवम् स्वरोजगार के विभिन्न ऑफ इंडिया (क्यूसीएफआई) टीम ने क्षेत्रीय स्तर की क्यूसीएफआई में जीत दर्ज़ की थी एवं राष्ट्रीय स्तर क्यूसीएफआई प्रतियोगिता में भी प्रतिनिधित्व किया था।इस क्यूसीएफ़आई प्रतियोगिता में एनटीपीसी सिंगरौली की दोनों टीम क्रमशः टीम ग्राम विकास के प्रतिभागियों - सुश्री सरस्वती सिंह, सुश्री सरोज श्रीवास्तव, श्री राम लखन पाण्डेय, सुश्री श्यामली राजाकी,

क्यूसीएफ़आई वाराणसी में क्षेत्रीय स्तर में स्वर्ण अवार्ड जीतने के बाद अब क्यूसीएफ़आई के राष्ट्रीय स्तर प्रतिस्पर्धा में प्रतिभाग करेगी। श्री बसुराज गोस्वामी, परियोजना प्रमुख, एनटीपीसी सिंगरौली ने विजेता टीम को बधाई दी एवम् कहा कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस क्षेत्रीय स्तर, क्यूसीएफआई, वाराणसी में प्रतिभाग करने वाली सभी टीमों में से केवल एनटीपीसी सिंगरौली की ही दोनों टीमें सी एस आर द्वारा प्रायोजित ग्रामीण स्तरीय एवं महिलाओं की थी, जिसने इस प्रतियोगिता में अन्य कॉपोरेट एजेंसियों के पुरुष कर्मचारियों के साथ प्रतिस्पर्धा की एवं गोल्ड अवार्ड कार्यक्रम भी आयोजित किए गए है एवम् वनिता समाज,एनटीपीसी सिंगरौली द्वारा भी महिला सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भर भारत के तहत आस-पास महिलाओं हेतु ब्यूटीशियन कोर्स, सिलाई प्रशिक्षण जैसे कौशल विकास प्रशिक्षण आयोजित किए जा रहें है। श्री आरिफ खान, क्वालिटी चैंपियन, क्यूसीएफआई के कुशल मार्गदर्शन में सभी ग्रामीण क्वालिटी सर्किल टीम को प्रशिक्षण प्रदान किया गया था एवम् एनटीपीसी पैनल द्वारा प्रस्तुतिकरण के आधार पर इन दोनों टीमों को क्षेत्रीय प्रतियोगिता हेतु चयनित किया गया था।इससे पूर्व वर्ष 2019 में भी एनटीपीसी सिंगरौली की ग्रामीण क्वालिटी सर्किल फोरम सुश्री श्वेता विश्वकर्मा, टीम मां ज्वाला के प्रतिभागियों-श्री रामकेश गुप्ता, सुश्री ममता, सुश्री लता कुमारी शॉ, सुश्री मुन्नेलाल गुप्ता, सुश्री सन्हा गुप्ता द्वारा गाँव के स्तर पर होने वाली समस्याओं, उनके कारक एवं समस्या के संभावित समाधान पर वस्तुपरक, तथ्यात्मक एवं तुलनात्मक प्रेजेंटेशन किया गया। सभी प्रतिभागियों, क्यूसीएफ़आई, उपस्थित जनों, निर्णायक मंडल द्वारा एनटीपीसी सीएसआर की इस सार्थक गतिविधि की सराहना की गयी। इस क्षेत्रीय प्रतियोगिता के दौरान श्री ओम प्रकाश, वरिष्ठ प्रबंधक, मानव संसाधन, श्री कुमार आदर्श, कार्यपालक सीएसआर, एनटीपीसी सिंगरौली एवम् श्री देवेश कुमार भी उपस्थित रहें।

आवेश खान की जगह इस स्टार पेसर को मिल सकता है मौका, जिम्बाब्वे के खिलाफ मचाया था धमाल

भारत और पाकिस्तान की टीमें एक बार फिर एशिया कप में आमने-सामने होने वाली हैं। यह मुकाबला दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। भारत और पाकिस्तान को इस मुकाबले से पहले राहुल द्रविड़ ने बताया कि आवेश खान स्वस्थ नहीं हैं। अब सवाल है कि उनकी जगह किसको शामिल किया जाएगा क्योंकि एशिया कप में चयन किए गए 15 खिलाडियों में सिर्फ तीन तेज गेंदबाज भुवनेश्वर कुमार, अर्शदीप सिंह और आवेश खान को शामिल किया गया है। एशिया कप के दोनों मैचों में आवेश खान का प्रदर्शन औसत रहा था। पाकिस्तान के खिलाफ 2 ओवर में 19 रन लुटाए और सिर्फ 1 विकेट हासिल कर सके जबकि हांगकांग के साथ खेलते हुए चार ओवर में 53 रन दिए और सिर्फ एक विकेट ले सके। आवेश की तबीयत खराब है और उनकी जगह स्टैंडबाई में मौजूद दीपक चाहर को प्लेइंग 11 में पाकिस्तान के खिलाफ सुपर 4 में मौका मिल सकता है भारत-पाकिस्तान मुकाबले से पहले दीपक चाहर को भारतीय टीम के साथ नेट प्रैक्टिस करते हुए देखा गया। सोशल मीडिया पर एक वीडियो भी शेयर किया जा रहा है जिसमें दीपक चाहर भारतीय बल्लेबाजों को गेंदबाजी करते देखे जा सकते हैं।

चोटिल खिलाडियों की परेशानी से जूझना पड़ रहा है। रवींद्र जडेजा टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं तो आवेश खान की तबीयत खराब है। वहीं पाकिस्तान के शाहनवाज दहानी भी इस मैच का हिस्सा नहीं होंगे। भारत आवेश की जगह पर दीपक चाहर को मौका दे सकता है। पाकिस्तान के मुकाबले से पहले मुख्य कोच

कई लोगों के पास मेरा नंबर, लेकिन टेस्ट कप्तानी छोड़ने पर सिर्फ धौनी का मैसेज आया

(आधुनिक मसाचार सेवा)

नई दिल्ली । पूर्व भारतीय कप्तान विराट कोहली ने कहा कि उनके टेस्ट कप्तानी छोड़ने के बाद सिर्फ पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धौनी ने ही उन्हें मैसेज किया था। विराट कोहली पिछले कुछ समय से अपनी फॉर्म से जूझ रहे हैं और उन्होंने इस साल जनवरी में टेस्ट कप्तानी छोड़ने का फैसला किया था। कोहली ने पाकिस्तान के विरुद्ध मैच के बाद कहा कि जब मैंने टेस्ट की कप्तानी छोड़ी तो मुझे सिर्फ एक व्यक्ति का मैसेज आया। उस इंसान के साथ मैं पहले खेल चुका था और वह एम एस धौनी हैं। कई लोगों के पास मेरा नंबर है। कई लोग टीवी पर मुझे सुझाव देते हैं और मेरे खेल के बारे में बात करते हैं, लेकिन जिन लोगों के पास मेरे नंबर हैं, धौनी को छोड़कर किसी ने मुझे मैसेज नहीं किया। अगर इनकी आलोचना सच्ची है तो इन्हें मुझे व्यक्तिगत रूप से मैसेज करना चाहिए था। उन्होंने कहा कि कुछ लोगों के साथ आपका सच्चा लगाव होता है। यह दोनों तरफ से होता है। ना मैं उनसे कुछ चाहता हूं और ना ही वे मुझसे कुछ चाहते हैं। मुझे उनके साथ असुरक्षित महसूस नहीं करता और ना ही वे मेरे साथ ऐसा महसूस करते हैं। अगर मुझे किसी के खेल के बारे में बात करनी है तो मैं उससे व्यक्तिगत तौर पर मिलूंगा। कोई पूरी दुनिया के सामने सुझाव देगा तो यह मेरे लिए मायने नहीं रखता। मैं जब तक खेल रहा हूं, मैं ईमानदारी से खेलूंगा। आपको बता दें कि विराट कोहली का प्रदर्शन एशिया कप 2022 में अच्छा हो रहा है। पाकिस्तान के खिलाफ सुपर-4 मैच में भी उन्होंने अच्छी बल्लेबाजी की और 60 रन बनाए। भारत ने इस मैच में पाकिस्तान के खिलाफ 20 ओवर में 7 विकेट पर 181 रन बनाए, लेकिन पाकिस्तान ने 19.5 ओवर में 5 विकेट पर 182 रन बनाते हुए इस मैच को जीत लिया। कोहली ने एशिया कप 2022 के तीन मैचों में अब तक कुल दो अर्धशतक लगाए हैं।

टी20टी में कोहली का नया वर्ल्ड रिकार्ड, रोहित को पीछे छोड़ सबसे ज्यादा 50 प्लस स्कोर उनके नाम

(आधुनिक मसाचार सेवा)

नई दिल्ली । भारत के पूर्व कप्तान विराट कोहली ने एशिया कप 2022 के सुपर-4 मुकाबले में पाकिस्तान के खिलाफ अर्धशतकीय पारी खेली। कोहली की इस पारी के दम पर भारतीय टीम ने 20 ओवर में 7 विकेट पर 181 रन बनाए। पाकिस्तान के खिलाफ खेली अपनी पारी के दम पर कोहली ने टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट का एक वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया और रोहित शर्मा को पीछे छोड़ दिया। यही नहीं पाकिस्तान के खिलाफ नौवें टी20 इंटरनेशनल मैच में ये उनका चौथा अर्धशतक भी था। टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में रन मशीन विराट कोहली अब सबसे ज्यादा 50 प्लस की पारी खेलने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ 60 रन की पारी खेली और ये 32वां मौका था जब उन्होंने टी20 में 50 रन से ज्यादा की पारी खेली। वहीं रोहित शर्मा ने 31 बार ऐसा किया था, लेकिन अब कोहली उन्हें दूसरे नंबर पर धकेलकर पहले भारत के लिए विराट कोहली ने 194वीं बार किसी मैच में 50 प्लस की पारी खेली और राहुल द्रविड़ को पीछे छोड़ दिया। द्रविड़ ने अपने क्रिकेट करियर में भारत के लिए 193 बार 50 रन से ज्यादा की पारी खेली थी। अब कोहली दूसरे नंबर पर आ गए तो वहीं द्रविड़ तीसरे नंबर पर खिसक गए। भारत के लिए सबसे ज्यादा 50 प्लस की पारी खेलने वाले बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर थे जिन्होंने 164 बार ऐसा कमाल किया था। भारत के लिए सबसे ज्यादा 50 प्लस की पारी खेलने वाले टॉप 5 बल्लेबाज- 264 - सचिन तेंदुलकर 194 - विराट कोहली 193 - राहुल द्रविड़ 144 - सौरव गांगुली 127 - रोहित शर्मा।

पहले मैच में पाकिस्तान की गेंदबाजी ज्यादा अच्छी थी

(आधुनिक मसाचार सेवा)

नई दिल्ली । भारत और पाकिस्तान के बीच सुपर 4 के मुकाबले से एक दिन पहले यानी शनिवार को टीम इंडिया के हेड कोच राहुल द्रविड़ ने प्रेस कांफ्रेंस में हिस्सा लिया था। इस प्रेस कांफ्रेंस के दौरान उन्होंने विराट कोहली, रवींद्र जडेजा, टीम इंडिया की वर्ल्ड कप के लिए तैयारी जैसे तमाम मसलों पर बात की थी। इस प्रेस कांफ्रेंस के दौरान उनके सामन एक सवाल ऐसा भी आया जब द्रविड़ थोड़े नाराज नजर आए और उन्होंने ऐसा जवाब दिया कि सबकी बोलती बंद कर दी। राहुल द्रविड़ से प्रेस कांफ्रेंस के दौरान एक पत्रकार ने पूछ लिया कि पहले मैच यानी भारत-पाकिस्तान के बीच जो ग्रुप मैच खेला गया था उसमें बाबर आजम की टीम के तेज गेंदबाजों ने ज्यादा अच्छी गेंदबाजी की थी। यानी पाकिस्तान की तेज गेंदबाजी भारत के मुकाबले ज्यादा मजबूत थी। इसका सवाल को सुनकर राहुल द्रविड़ थोड़े नाराज नजर आए और उन्होंने कहा कि मैं पाकिस्तान टीम के गेंदबाजों की इज्जत करता हूं और उन्होंने वास्तव में गेंदबाजी की, लेकिन हमारे गेंदबाजों ने भी उन्हें 147 रन पर रोककर अच्छी गेंदबाजी की। द्रविड़ ने आगे कहा कि आप चाहें मैदान पर 147 या 145, 135, 125 की स्पीड से गेंदबाजी करें और चाहें गेंद को सीम कराएं या स्विंग कराएं। इन सबसे क्या फर्क पड़ता है और आखिर में नतीजा देखा जाता है और मैं देख रहा हूं कि भारत ने मैच जीत लिया। इस प्रेस कांफ्रेंस में राहुल द्रविड़ ने कोहली के बारे में कहा कि वो ज्यादा से ज्यादा से ज्यादा रन टीम के लिए बनाने को बेताब दिख रहे हैं। वहीं रवींद्र जडेजा के बारे में उन्होंने कहा कि टी20 वर्ल्ड कप अभी दूर है और वो अभी उन्हें इससे बाहर नहीं मान रहे हैं। वहीं उन्होंने टी20 वर्ल्ड कप के बारे में कहा कि हम हर पोजिशन के लिए बैकअप खिलाड़ी तैयार कर रहे हैं और इससे हमें मदद मिलेगी।

भारत और न्यूजीलैंड टीमों के बीच मैच ड्रा पर समाप्त रजत पाटिदार और तिलक वर्मा ने लगाए शतक

(आधुनिक मसाचार सेवा)

नई दिल्ली । रजत पाटिदार के176 रन और तिलक वर्मा की 121रन की शतकीय पारी के बाद कुलदीप यादव की नियंत्रित गेंदबाजी से रविवार को भारत-ए और न्यूजीलैंड-ए के बीच पहला अनौपचारिक टेस्ट चौथे और अंतिम दिन ड्रा पर समाप्त हुआ। भारत-ए के कप्तान प्रियांक पांचाल ने पहली पारी छह विकेट पर 571 रन पर घोषित की। न्यूजीलैंड-ए ने दूसरी पारी में चार विकेट पर 133 रन बनाए जिसके बाद आखिरी दिन का खेल समाप्त हो गया। न्यूजीलैंड-ए ने पहली पारी में 400 रन बनाए थे और भारत पहली पारी में 171 रनों की बढ़त लेने में सफल रहा। दूसरी पारी में कुलदीप यादव की गेंदबाजी शानदार रही और उन्होंने 22 ओवर में 38 रन देकर दो विकेट झटके। उन्होंने न्यूजीलैंड-ए के दांये हाथ के सलामी बल्लेबाज चाड बोवेस (24) को गुगली से अपना शिकार बनाया। उन्होंने मार्क चैपमैन (23) को भी आउट किया। कुलदीप ने जिस तरह से अपनी गेंदों की गति में विविधता दी, यह देखना शानदार था। तिलक ने भारत-ए के लिए पदार्पण में चमकदार प्रदर्शन किया। अपने इस पहले अनौपचारिक टेस्ट से पहले उन्होंने केवल चार प्रथम श्रेणी मैच खेले थे और उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 90 रन का था। इस मैच में तिलक ने शतक जड़ा जो उनका पहला प्रथम श्रेणी शतक है। उन्होंने पारी के दौरान नौ चौके और छह छक्के लगाए। बायें हाथ के इस बल्लेबाज ने इस साल इंडियन प्रीमियर लीग में मुंबई इंडियंस के लिए खेलकर सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया था। मैच में अभिमन्यु ईश्वरन ने नई गेंद के विरुद्ध शानदार बल्लेबाजी की और बड़े स्कोर की नींव रखी, जबकि पाटीदार ने न्यूजीलैंड-ए के गेंदबाजों की धज्जियां उड़ाई।

ये लड़का मुझे बड़ा पसंद हैं' आखिर किस प्लेयर की बात कर रहे हैं स्विंग के सुल्तान वसीम अकरम

(आधुनिक मसाचार सेवा)

नई दिल्ली । दुबई के मैदान पर होने वाले सुपर 4 के दूसरे मुकाबले से पहले पाकिस्तान के पूर्व कप्तान ने अपनी टीम को एक सलाह दी है। उन्होंने कहा है कि इस मैच में पाकिस्तान मैदान पर बोल्ड निर्णय ले और बिना किसी डर के खेलने उतरे। लीग स्टेज में टीम इंडिया ने टी20 वर्ल्ड कप का बदला लेते हुए पाकिस्तान की टीम को 5 विकेट से हराया था। पाकिस्तान के खिलाफ उस मैच में जीत के हीरो रहे थे हार्दिक पांड्या जिन्होंने बल्ले और गेंद दोनों से पाकिस्तान को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया था। गेंदबाजी में हार्दिक ने 25 रन देकर 3 जबकि बल्लेबाजी में 17 गेंदों पर 33 रन की पारी खेली थी। सुपर संडे के इस महामुकाबले से पहले पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज वसीम अकरम ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने बताया कि क्रिकेट के इस छोटे फॉर्मेट में हार्दिक पांड्या उनके फेवरेट खिलाड़ी है। क्रिकेट पाकिस्तान से बातचीत करते हुए वसीम ने कहा कि 'मुझे ये लड़का बड़ा पसंद है खासकर ऊ20घ् में क्योंकि वह एक बेहतरीन ऑलराउंडर हैं। जैसे पाकिस्तान के पास शादाब खान हैं। हार्दिक की बात करें तो उनके पास गति 140 किमी प्रति घंटे की रफ्तार है और वह एक कमाल के फील्डर भी हैं। जब उनकी बल्लेबाजी की बात आती है तो वह निडर होते हैं। मुझे उम्मीद है कि मैं गलत साबित होऊं, लेकिन पाकिस्तान को हारी हुई मानसिकता से बाहर निकलने की जरूरत है। शायद यह हमारी वजह से है क्योंकि हम सोशल मीडिया पर मीम्स बनाते हैं। यह सही नहीं है।वसीम अकरम ने पाकिस्तान टीम से गुजारिश की है कि टीम बिल्कुल निडर होकर क्रिकेट खेले जैसे टीम इंडिया उनके खिलाफ खेलती है। उन्होंने आगे कहा कि 'एक पाकिस्तानी होने के नाते, मैं चाहता हूं कि पाकिस्तान जीत जाए लेकिन टीम इंडिया जीत के बाद मैच इस मैच में आ रही है। टीम इंडिया अपनी हालिया सफलताओं के बाद आत्मविश्वास से भरी हुई है। हालांकि जडेजा के न खेलने पर उन्होंने कहा कि 'वह एक प्रमुख खिलाड़ी हैं। उनकी जगह अक्षर पटेल को लिया गया है। उन्होंने और पांड्या ने पिछली बार भारत के लिए मैच जीता था। भारत ने उस समय जडेजा को प्रमोट किया था। इसलिए पाकिस्तान को ऊ20घ् क्रिकेट खेलते समय कुछ जोखिम लेने की जरूरत है।एशिया कप में दोनों टीमों के बीच अब तक हुए मुकाबलों की बात करें तो 15 बार दोनों टीमें भिड़ी है जिसमें से 9 बार भारत ने तो 5 बार पाकिस्तान ने बाजी मारी है। केवल एक मुकाबला बारिश के कारण पूरा नहीं हो सका था।

रोहित शर्मा ने सूजी बेट्स का रिकॉर्ड तोड़ा और टी 20 में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज बने

(आधुनिक मसाचार सेवा)

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा ने एशिया कप 2022 के सुपर-4 मुकाबले में पाकिस्तान के खिलाफ 12 रन बनाते ही वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। रोहित शर्मा अब टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने के मामले में पहले नंबर पर पहुंच गए हैं। ये रिकॉर्ड पहले न्यूजीलैंड की महिला बल्लेबाज सूजी बेट्स के नाम पर दर्ज था। वैसे तो रोहित शर्मा टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट (पुरुष) में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज थे, लेकिन वो अब ऑवरऑल टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट (पुरुष और महिला) में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज बन गए रोहित शर्मा ने पाकिस्तान के खिलाफ अपनी पारी की शानदार शुरुआत की थी और कमाल की बल्लेबाजी कर रहे थे, लेकिन हारिस राउफ की गेंद पर कैच आउट हो गए। उन्होंने 16 गेंदों का सामना करते हुए 2 छक्के व 3 चौकों की मदद से 18 रन बनाए। यही नहीं इस पारी के साथ ही वो टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज भी बन गए और उन्होंने सूजी बेट्स का रिकॉर्ड तोड़ दिया। रोहित शर्मा के टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट की बात करें तो उन्होंने 135 मैचों की 127 पारियों में 31.96 की औसत से 3548 रन बनाए हैं। इसमें चार शतक और 27 अर्धशतक शामिल है साथ ही उन्होंने अब तक 318 चौके व 167 छक्के लगाए हैं।सूजी बेट्स ने टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में 3531 रन बनाए हैं, लेकिन रोहित शर्मा उनसे आगे निकल चुके हैं। 34 साल की सूजी बेट्स ने क्रिकेट के सबसे छोटे प्रारूप में अपनी टीम के लिए 131 मैचों में एक शतक और 22 अर्धशतक की मदद से 3531 रन बनाए हैं। उनका औसत 29.92 का रहा है जबकि स्ट्राइक रेट 110.89 का है। उन्होंने अब तक 387 चौके व 32 छक्के लगाए हैं जबकि बेस्ट स्कोर नाबाद 124 रन रहा है।

चोट की वजह से भारत और पाकिस्तान को लग चुके हैं बड़े झटके

(आधुनिक मसाचार सेवा)

नई दिल्ली । एशिया कप 2022 में भारत और पाकिस्तान की टीम को ट्रॉफी जीतने का दावेदार माना जा रहा है। भारत डिफेंडिंग चैंपियन है जबकि पाकिस्तान का गेंदबाजी आक्रमण उसकी रेस में आगे ले जा सकता है। इस टूर्नामेंट की दो दमदार टीमों को इस वक्त चोटिल खिलाडियों की परेशानी से जूझना पड़ रहा है। भारत और पाकिस्तान के स्टार तेज गेंदबाज टूर्नामेंट में नहीं खेल रहे हैं। अब तक कुल 6 खिलाडियों के टूर्नामेंट से बाहर होने की खबर आ चुकी है। भारत और पाकिस्तान दोनों ही टीमें एशिया कप में अपने प्रमुख गेंदबाज के बिना खेलने को मजबूर हैं। टीम इंडिया को टीम चयन से पहले झटका लगा तो वहीं पाकिस्तान को टूर्नामेंट से ठीक पहले जोरदार झटका लगा।

राशिफल

मेष-: शारीरिक और मानसिक लाभ के लिए ध्यान और योग उपयोगी रहेगा। बुद्धिमानी से किया गया निवेश ही फलदायी होगा, इसलिए अपनी मेहनत की कमाई को सोच-समझकर ही निवेश करें।

वृष-: आज का दिन आपके लिए बढिया रहेगा। यदि आप अपने जीवन साथी से स्नेह की अपेक्षा रखते हैं तो आज का दिन आपकी उम्मीदों पर खरा उतरेगा। लवमेट के साथ आज कहीं घूमने का प्लान बना सकते हैं।

मिथुन-: आज आप में से कुछ लोग महत्वपूर्ण निणय् लेने पर मजबूर हो सकते हैं, जिससे आप तनावग्रस्त और चिंतित हो सकते हैं. घरेलू सुख-सुविधा की चीजों पर जरूरत से ज्यादा खर्च न करें।

कर्क-: आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। इस राशि के जो लोग बेरोजगार हैं उन्हें आज किसी अच्छी कंपनी से नौकरी का ऑफर मिल सकता है। लंबी यात्रा के कारण आपको थोड़ी थकान महसूस हो सकती है

सिंह-: बेचैनी आपकी मानसिक शांति भंग कर सकती है. अपने अतिरिक्त धन को सुरक्षित स्थान पर रखें, जो आपको भविष्य में वापस मिल सके। पारिवारिक समस्याओं को प्राथमिकता दें।

कन्या-: आज आप सभी परेशानियों और चिंताओं को पीछे छोड़कर अपने परिवार के साथ कुछ समय बिताना चाहेंगे. आज आपका जाता हुआ दिखाई देगा जिसके बारे में आपने सोचा भी नहीं होगा।

तुला-: आज आपका दिन खुशियों से भरा रहेगा. आज आपका स्वास्थ्य बेहतर रहेगा। बड़ों का प्यार और आशीर्वाद मिलेगा। आज बाहरी यात्राओं का दौर रहेगा और यह यात्रा सुखद भी रहेगी।

वृश्चिक-: आपको मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। हार न मानें और मनचाहा परिणाम पाने के लिए कड़ी मेहनत करें। इन असफलताओं को प्रगति का आधार बनाएं। मुश्किल समय में रिश्तेदार भी काम आएंगे।

धनु-: इससे पहले कि नकारात्मक विचार मानसिक बीमारी का रूप ले लें, आपको उन्हें खत्म कर देना चाहिए. आप किसी धर्मार्थ कार्य में भाग लेकर ऐसा कर सकते हैं, जिससे आपको मानसिक संतुष्टि मिलेगी।

मकर-: आज ऑफिस में लंबे समय से रुका हुआ काम पूरा हो सकता है. इस राशि के छात्रों के लिए आज का दिन अच्छा रहेगा। आज आपको अपने लवमेट के साथ समय बिताने की जरूरत है।

कुंभ-: आज आपको थकान महसूस होगी और छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा आ सकता है. आज आपको जमीन, जमीन जायदाद या सांस्कृतिक परियोजनाओं पर ध्यान देने की जरूरत है।

मीन-: आज आपका ध्यान रचनात्मक कार्यों में रहेगा. आज आप कोई नई रचना भी शुरू कर सकते हैं। सामाजिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। आप किसी सामाजिक संगठन से जुड़ने का मन बना सकते हैं।

सम्पादकीय

पक्षियों की रोचक दुनियारू विलुप्त होने की कगार पर कई गिद्ध प्रजातियांए पर्यावरण के लिए यह गंभीर संकट का विषय

1990 के दशक के मध्य से 2007 के दौरानए 99ण्9ः सफेद दुम वाले गिद्ध गायब हो गए और अब भारत में उनकी संख्या केवल 6ए000 रह गई है। इस गंभीर रूप से लुप्तप्राय गिद्ध को अब ष्क्रिटिकली ऐनदेनजर्दष् प्राणी के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इसी तरह की बदकिस्मती का सामना लम्बे बिल वाले गिद्धों को भी करना पड़ाए जिसकी आबादी में लगभग 97ः की भारी गिरावट देखी गई। एक कड़क सर्द दुपहरी कोए राजस्थान और मध्य प्रदेश के सीमा के बीच चलने वाली चम्बल नदी के नालों परए सूर्य के स्वर्ण किरणों से मानो आग सी लगी थी। रेत के किनारे और चट्टान की सतहों पर मगरए घड़ियाल धूप का आनंद ले रहे थे और नद.कछुए चंबल की सुरक्षा में आलसपूर्ण तैराकी कर रहे थे। तभी सफारी नाव के पहुँचने से उनकी निर्धारित सुरक्षित सीमा कि दूरी भांग सी हो गई। इन्हीं नालों के किनारे एक रेशमी.सूती के ऊँचे पत्ते झड़े हुए पेड़ परए मिस्र देशीय गिद्धों का एक समूह बैठा था। उनमें से एक नर और एक किशोर गिद्ध एकाएक उड़ निकले और चम्बल और उसके नालों पर एक के बाद एक बढ़ते हुए संकिंद्रिक चक्रों में उड़ान भरने लगे।कदाचितए अत्यंत सर्द रात्रि से पहलेए यह उनके लिए भोजन कर निश्चिंत होने का समय था। लगता था जैसेए आकाश से उनकी तीक्ष्ण निगाहें भोजन के लिए नीचे बीहड़ बेरंग नालों को तलाश रही हों। तय रूप से गिद्धों का आहार मृत जानवरों का मांस होता हैए और ऐसे समय में यह सरलता से माना जा सकता है कि मृत मवेशी इन गिद्धों के लिए एक सहज भोजन का उपाय होंगे। किन्तु सन 1990 से हीए इस इलाके में गिद्ध होना आसान नहीं रहा है। एक अबोध गिद्ध के रामायण के प्रसिद्ध पात्र जटायु के समय से हीए गिद्धों ने भारतीय लोकनीति में एक महत्वपूर्ण स्थान पाया है। यद्यपि देश.स्तरीय दीर्घकालिक जनसंख्या अनुमान शायद ही उपलब्ध होंए भारत में 1990 के दशक की शुरुआत तक लाखों गिद्ध थे। भारतीय उपमहाद्वीप में गिद्धों की नौ प्रजातियां पाई जाती हैं. सफेद दुम वाले जिप्स बेंगालेंसिसए लंबे चोंच वाले जीण् इंडिकसए पतले चोंच वाले जीण् टेनुइरोस्ट्रिसए लाल सिर वाले सरकोजिप्स कैल्वसए मिस्र देशीय गिद्ध नियोफ्रॉन पर्कनोप्टेरसए हिमालयन ग्रिफॉन जिप्स हिमालयेंसिसए सिनेरस गिद्ध एजिपियस मोनाचसए दाढ़ी वाले गिद्ध जिपेटस बारबेटस और यूरेशियन ग्रिफॉन जिप्स फुल्वस इन नौ प्रजातियों में सेए विश्व स्तर पर सफेद दुम वाले जिप्स बेंगालेंसिस को सबसे सामान्य बड़ा रैप्टर माना जाता था। मवेशियों के मृत शव का सेवन करने के कारण गिद्ध हमारे परिवेश को स्वच्छ रखने का एक अमूल्य पारिस्थितिकी तंत्र रहे हैं। इसी के साथ मनुष्य जाति को महामारी और नुकसान पहुंचाने वाले कीड़ों पर नियंत्रण पाने में भी सहायता मिल जाती है। यूरोपीय संदर्भ में यह पाया गया है किए गिद्ध सड़े हुए मृत जानवरों के शरीर का भक्षण करने के माध्यम से सालाना लगभग 1ए600ए000 यूरो ;लगभग एक 13ण्40 करोड़द्ध तक की सेवाएं प्रदान करते है।भोजन के लिए गिद्धए जंगलीध्आवारा कुत्तों से भी प्रतिस्पर्धा करते हैंए जिससे कुत्तों की आबादी पर अनायास ही नियंत्रण रखने में योगदान मिल जाता है। भारत मेंए 1990 के दशक के मध्य से ही गिद्धों की आबादी में गिरावट के साथ.साथए जंगली कुत्तों की आबादी में भारी वृद्धि देखी गई हैए जिसने संभावित रूप से अधिक लोगों को कुत्ते के काटने और रेबीज के खतरे में डाल दिया गया। 2008 में एक अध्ययन में यह अनुमान लगाया गया कि गिद्धों की आबादी में एक इकाई की वृद्धिए कुत्तों की आबादी में लगभग सात इकाइयों की गिरावट का परिणाम देती है। इसी अध्ययन ने विश्लेषण किया कि भारत में करीब दस लाख कुत्तों के काटने सेए क्रमशः 538ण्6 मिलियन रुपये सब्सिडी वाले और 3ए956 मिलियन रुपये बिना सब्सिडी वाले रेबीज वैक्सीन की ज़रूरत होती है।1990 के दशक के मध्य से 2007 के दौरानए 99ण्9ः सफेद दुम वाले गिद्ध गायब हो गए और अब भारत में उनकी संख्या केवल 6ए000 रह गई है। इस गंभीर रूप से लुप्तप्राय गिद्ध को अब ष्क्रिटिकली ऐनदेनजर्दष् प्राणी के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इसी तरह की बदकिस्मती का सामना लम्बे बिल वाले गिद्धों को भी करना पड़ाए जिसकी आबादी में लगभग 97ः की भारी गिरावट देखी गई। अब अनुमानित है कि केवल 30ए000 लम्बे बिल वाले गिद्ध शेष हैं। इस कारण इन्हें भी ष्क्रिटिकली ऐनदेनजर्दष् प्राणियों की गिनती में रखा गया है।

विश्वविद्यालयों में शिक्षक के पदों पर स्थायी नियुक्ति करने से सुधरेगी शिक्षा की गुणवत्ता

दिल्ली विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों में स्थायी शिक्षकों से अधिक तदर्थ शिक्षक काम कर रहे है। कुछ महाविद्यालयों में तो स्थिति यह है कि 70 से 80 प्रतिशत तदर्थ शिक्षक काम कर रहे है। जबकि यूजीसी के दिशानिर्देशों के अनुसार 10 प्रतिशत से ज्यादा तदर्थ शिक्षक नहीं होने चाहिए। विवि से संबद्ध कई ऐसे महाविद्यालय हैए जहां बीते एक दशक से भी अधिक समय से कोई भी स्थायी नियुक्ति नहीं हुई है। विवि के शिक्षक संगठनों के अनुसार आरक्षण व रोस्टर को लेकर संसदीय समिति की रिपोर्ट आज तक लागू नहीं हुई है। संसदीय समिति ने दिल्ली विवि में 4500 पदों का बैकलाग पाया था और रोस्टर को लेकर कई विसंगतियों का जिक्र किया था। लेकिन चिंता की बात है कि वर्तमान में दिल्ली विवि के कालेजों द्वारा निकाले जा रहे विज्ञापनों में केंद्र सरकार की आरक्षण नीति को सही ढंग से लागू नहीं किया जा रहा है। साथ ही जो पद निकाले जा रहे है उनमें शार्टफालए बैकलाग और विवि द्वारा बनाई गई प्रोफेसर काले कमेटी की रिपोर्ट को स्वीकारते हुए सही रोस्टर नहीं बनाया गया है। इसमें कोई दो राय नहीं कि विवि में शिक्षण कार्य में पदों को आरक्षित करना जटिल काम है। इसकी सबसे बड़ी वजह है सीटों का कम होना और सभी विभागों में इनके लिए योग्यता एक जैसी नहीं होती। मसलन हिंदी साहित्य में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद के लिए योग्यता किसी अन्य विषय के इसी पद के लिए अलग हो सकती है। इसके इतर विवि प्रशासन के तमाम दावों.घोषणाओं के बावजूद न तो शिक्षकों के पद समय पर भरे जा रहे है और न ही तदर्थ शिक्षकों को नियमित किया जा रहा है। उच्च शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षकों की नियुक्ति से जुड़ा रोस्टर विवाद पहली बार वर्ष 2006 में सामने आया था। उस वक्त केंद्रीय विवि में ओबीसी आरक्षण के तहत नियुक्तियों के सवाल के समाधान के लिए तत्कालीन सरकार के कार्मिक तथा प्रशिक्षण मंत्रालय ने यूजीसी से विवि में आरक्षण लागू करने की खामियों को दूर करने का निर्देश दिया था।

इस पर यूजीसी के तत्कालीन चेयरमैन ने प्रोफेसर रावसाहब काले की अध्यक्षता में विवि में आरक्षण फार्मूला तय करने के लिए तीन सदस्यीय कमेटी का गठन किया था। प्रोफेसर काले कमेटी ने डीओपीटी मंत्रालय के दो जुलाई 1997 के दिशानिर्देश कोए जो कि उच्चतम न्यायालय के सब्बरवाल जजमेंट के आधार पर तैयार हुआ हैए उसे आधार मानते हुए 200 प्वाइंट का रोस्टर बनाया। इसमें किसी विवि के सभी विभाग में कार्यरत असिस्टेंट प्रोफेसरए असोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर का तीन स्तर पर कैडर बनाने की अनुशंसा की गई। कमेटी ने विभाग की बजाय विविए कालेज को यूनिट मानकर आरक्षण लागू करने की संस्तुति कीए क्योंकि उक्त पदों पर नियुक्तियां विवि करता हैए न कि उसका विभाग। लेकिन दिल्ली विवि लंबे समय तक अपनी स्वायत्तता का हवाला देकर काले समिति द्वारा सुझाया गया 200 प्वाइंट की रोस्टर प्रणाली लागू करने से ही मना करते रहाए लेकिन जब सामाजिकए राजनीतिक और कानूनी दबाव बनने लगा तो आरक्षण लागू करने की हामी तो भरीए लेकिन अब भी इसे प्रभावी रूप से नहीं लागूकिया जा सका है। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार देश के 48 केंद्रीय विवि में अक्टूबरए 2021 तक कुल स्वीकृत 18ए905 संकाय ;फैकल्टीद्ध पदों में से 6ए333 शिक्षकों के पदिरक्त थे। उच्च शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों की कमी का आलम ये है कि जेएनयू जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में शिक्षक संकाय के 326 पद रिक्त हैं। सेवानिवृत्तिए त्यागपत्र और छात्रों की बढ़ी हुई संख्या के कारण अतिरिक्त आवश्यकताओं के परिणामस्वरूप रिक्तियां उत्पनन होती है। लेकिन शिक्षक संकाय की कमी को दूर करने के लिए विभिनन उपाय अपर्याप्त ही साबित हुए है। यहां यह जानना जरूरी है कि देश के केंद्रीय विवि में शिक्षकों की कमी की समस्या लंबे समय से बनी हुई होने तथा हर वर्ष स्थिति और खराब होते जाने के बीच इससे निपटना सरकार को जरूरी नहीं लगता। विवि में न सिर्फशिक्षा की गुणवत्ता पर असर पड़ रहा हैए बल्कि इससे शिक्षकों की कमी चिंताजनक बनी हुई है। जो शिक्षा मंत्रालय केंद्रीय विवि में शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने में मुस्तैद न होए वह राज्यों से कैसे यह कह सकता है कि वे इस मामले में तेजी दिखाएं यह बेवजह नहीं है कि प्रयोगशालाओंए पुस्तकालयोंए खेल परिसरों आदि में सुविधाओं और संसाधनों के घोर अभाव से जूझते विवि की सबसे बड़ी समस्या आज शिक्षकों की कमी हो चुकी हैए जिसके चलते शैक्षणिक सत्र समय पर पूरे नहीं हो पा रहे है। इन संस्थानों से निकलने वाले विद्यार्थियों के बीच विदेश में प्रतिभा पलायन और शिक्षण को करियर के रूप में न चुनना शिक्षकों की कमी की एक वजह हो सकती है। एक प्रशन यह भी है कि खाली पदों को भरने की प्रक्रिया इतनी धीमी क्यों हैघ् इसी तरह क्या वजह है कि विवि के कुलपति कंरिक्त पद भी मुश्किल से भरे जा पा रहे हैघ् और शिक्षकों के रिक्त पद भरने के मामले में यह नहीं कहा जा सकता कि देश में योग्य शिक्षक नहीं रह गए है। कई बार यह सुनने को मिलता है कि उच्च शैक्षणिक संस्थान शिक्षा के आवश्यक मानकों पर खरे नहीं उतर रहे है। परंतु जब इतनी बड़ी संख्या में शिक्षकों के पद रिक्त हों तो दूसरे मानकों पर वे कैसे खरे उतर सकते है। उवर्ष 2015.16 की तुलना में 2019.20 में विवि की संख्या में लगभग 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस वृद्धि के अनुरूप शैक्षणिक और प्रशासनिक बुनियादी ढांचे को मजबूत नहीं किया गया है। देश के विवि में शिक्षकों के रिक्त पद भरने का काम भले ही धीमी गति से हो रहा होए लेकिन उच्च शैक्षणिक संस्थानों में दाखिला लेने वाले युवाओं की संख्या में निरंतर बढ़ोतरी हो रही है। इस मसले पर जारी वार्षिक रिपोर्ट के मुताबिक उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात पहली बार 25 प्रतिशत से अधिक हुआ है। उम्मीद यही की जानी चाहिए कि सरकार तत्परता दिखाकर आने वाले समय में जल्दी ही योग्य एडहाक शिक्षकों को स्थायी नियुक्ति देगी। यहां एक सुझाव यह भी महत्वपूर्ण है कि शिक्षकों की स्थायी नियुक्तियों से पूर्व रोस्टरए काले कमेटी की रिपोर्टए 10 प्रतिशत अतिरिक्त ईडब्लूएस आरक्षण लागू करते हुए व विज्ञापनों की सही से जांच कराने के लिए एक पांच सदस्यीय उच्चस्तरीय कमेटी बनाई जानी चाहिए और जो भी बैकलाग पद हैए उसे भरने के लिए समय सीमा निर्धारित की जानी चाहिए। अभी प्रोफेसरों की सेवानिवृत्ति की उम्र और कुलपतियों के कार्यकाल की सीमा भी अलग.अलग राज्यों में अलगअलग है। ऐसे में भी राष्ट्रीय स्तर पर एक नीति की जरूरत है। उच्च शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया बहुत लंबी है और इसमें प्रक्रियागत औपचारिकताएं बहुत अधिक हैं। ऐसे में मानव संसाधन विकास संबंधी स्टैंडिंग कमिटी के इस सुझाव को अमल में लाया जाना चाहिए जिसमें कहा गया था कि भर्ती प्रक्रिया पद के रिक्त होने से पहले ही शुरू कर दी जानी चाहिए।

जिहादी आतंकवाद और लव जिहाद को लेकर सुर्खियों में झारखंड

झारखंड के दुमका में अंकिता नामक युवती की हत्या पर लोगों का आक्रोश थमा भी नहीं था कि वहां से एक आदिवासी लड़की की दुष्कर्म के बाद हत्या की खबर आ गई। सामान्य स्थिति में इसकी कल्पना नहीं की जा सकती कि एक लड़की अपने घर में सोई हो और उसे भोर में पेट्रोल फेंक कर जला दिया जाए। अंकिता को जलाए जाने के कुछ घंटे बाद ही यह खबर वायरल हो गई। यदि झारखंड सरकार कोई पछतावा है। जघन्य अपराध करने वाला कोई शख्स गिरफ्तारी के बाद ऐसे मुस्कुराए मानो उसने कुछ गलत किया ही नहीं और उसे कुछ होगा नहीं या जो होगा, उसकी उसे कोई परवाह नहीं तो फिर इसके कारणों की अलग तरीके से छानबीन करने की आवश्यकता महसूस होती है। हमारे देश में कई बार सच बोलना अपराध बन जाता है। दुनिया भर के जिहादी भय और घबराहट में आतंकी घटना को बातें होंगी जो सामने नहीं आई होंगी। पलामू जिले के मुरूमातू गांव में मुसलमानों के एक समूह ने 20 दलित परिवारों के घरों को यह कहकर ध्वस्त कर दिया कि वे मदरसे की जमीन पर बने थे। पिछले मार्च में उत्तर प्रदेश आतंकवाद निरोधक दस्ते ने देवबंद से इनामुल हक उर्फ इनाम इम्तियाज को गिरफ्तार किया। लश्कर-ए-तैयबा से उसके संबंध के प्रमाण मिले और पता चला कि वह आतंकी दिया गया था। इंडियन मुजाहिदीन का एक बड़ा तंत्र झारखंड में पाया गया था। पिछली जुलाई में प्रधानमंत्री की पटना यात्रा के एक दिन पहले 11 जुलाई को पटना से फुलवारी शरीफ तक पीएफआइ का जो बहुचर्चित माड्यूल पकड़ में आया, उसका प्रमुख जलालुद्दीन झारखंड के कई थानों में दरोगा के रूप में कार्य कर चुका है। पिछले 10 जून को जुमे की नमाज के बाद रांची में जिस ढंग का उत्पात

इसकी गंभीरता को समझती तो उसे बेहतर इलाज के लिए एयरलिफ्ट किया जा सकता था।मुख्यमंत्री और अन्य मंत्री चाहे जितने आक्रामक बयान दें, इस जघन्य अपराध के तीन दिनों तक लगा ही नहीं कि झारखंड में कोई संवेदनशील सरकार भी है। इस घटना पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का वक्तव्य पांचवें दिन आया। हेमंत सोरेन सरकार की कानून-व्यवस्था संबंधी नीतियां काफी समय से आलोचना के घेरे में हैं। प्रशन है कि अंकिता को जलाकर मारने वाले शाहरुख ने ऐसा क्यों किया होगा? झारखंड प्रशासन को सोचना चाहिए कि कोई वैसा दुस्साहस कैसे कर सकता है, जैसा शाहरुख ने किया पिछले कुछ वर्षों में झारखंड की घटनाओं को देखें तो इसके एक दूसरे खतरनाक पहलू की ओर भी दृष्टि जाती है। पुलिस द्वारा पकड़े जाने के बाद जिस ढंग से शाहरुख मुस्कुरा रहा था, उससे ऐसा लगा ही नहीं कि उसे अपने किए पर अंजाम नहीं देते। ज्यादातर मानसिक रूप से स्थिर अवस्था में स्वयं को आत्मघाती विस्फोटक बनाते है। ऐसे आतंकियों पर की गई छानबीन बताती है कि उन्हें विशेष आनंद की अनुभूति होती है, क्योंकि वे मानते है कि मजहबी आदेश का पालन कर रहे है। शाहरुख के बारे में अभी तक ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला, जिससे यह मान लिया जाए कि वह अतिवादी मजहबी कट्टरता से भरा हुआ था, किंतु इस आशंका को खारिज भी नहीं किया जा सकता। झारखंड देश में मुस्लिम कट्टरवाद और जिहादी आतंकवाद के साथ लव जिहाद की दृष्टि से हमेशा सुखिर्यों में रहा है। झारखंड के जामताड़ा में अनेक स्कूलों में प्रार्थना के तरीके बदले जाने का मामला सामने आया। वहां मुसलमानों के एक समूह ने कहा कि वे बहुमत में हैं तो उनके अनुसार ही प्रार्थना होनी चाहिए। इसी तरह रविवार की जगह शुक्रवार को स्कूल में छुट्टियां हो रही थीं। ये घटनाएं सामने आ गईं, लेकिन ऐसी भी कुछ गतिविधियों में शामिल होने की तैयारी कर रहा था। यह झारखंड का पहला ऐसा मामला नहीं। 2003 में दिल्ली के अंसल प्लाजा विस्फोट मामले में शाहनवाज का नाम सामने आया था, जो जमशेदपुर का रहने वाला था। सितंबर, 2019 में झारखंड एटीएस ने अलकायदा से जुड़े कलीमउद्दीन मुजाहिरी को गिरफ्तार किया था। एटीएस ने बयान दिया कि इसकी गिरफ्तारी के साथ झारखंड में सक्रिय अलकायदा का स्लीपर सेल ध्वस्त हो गया है। कलीमउद्दीन अलकायदा के सक्रिय आतंकी अब्दुल रहमान अली उर्फ कटकी, जो तिहाड़ जेल में बंद है, का सहयोगी था। कटकी के अलावा अब्दुल सामी, अहमद मसूद, राजू उर्फ नसीम अख्तर और जीशान हैदर भी गिरफ्तार हुए। पीछे लौटें तो अक्टूबर, 2013 में पटना के गांधी मैदान में आयोजित नरेन्द्र मोदी की सभा और जुलाई, 2013 में बोधगया में हुए आतंकी धमाकों के दोषी झारखंड से ही पकड़े गए थे। इसे रांची माड्यूल का नाम हुआ, वह देश के सामने है। पुलिस ने हिंसा करने वालों में से कुछ की तस्वीरें चौराहे पर लगाईं, पर उन्हें यह कहकर हटा दिया गया कि उनमें कुछ गड़बड़ियां है और सही करके दोबारा लगाया जाएगा, लेकिन ऐसा नहीं किया गया। पिछले सात-आठ वर्षों में झारखंड ने लव जिहाद के मामलों में कई राज्यों को पीछे छोड़ दिया है। 2014 में तारा शाहदेव नामक शूटर की घटना ने पूरे देश को चौंकाया था। रंजीत कोहली नाम के एक शख्स ने उसे प्रेम जाल में फंसा कर शादी की, जो बाद में रकीबुल हसन निकला। उसके बाद से लगातार ऐसी घटनाएं हो रही हैं। अंकिता का मामला भी ऐसा ही जान पड़ता है। अंकिता मामले की जांच मुस्लिम कट्टरवाद के दृष्टिकोण से भी आवश्यक है, लेकिन जो सरकार पुलिस पर हमला करने वाले हिंसक तत्वों की तस्वीरें लगाकर हटा सकती है, वह सच सामने लाने के लिए प्रतिबद्धता दिखाएगी, इसमें संदेह है।

भारत-बांग्लादेश संबंधों को नया आयाम देने का अवसर, मगर कुछ अवरोध अभी भी कायम

ब्रिगेडियर आरपी सिंह : बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना का चार दिवसीय भारत दौरा आरंभ हो गया है। भारत-बांग्लादेश के संबंध बहुत विशिष्ट हैं, क्योंकि बांग्लादेश के स्वतंत्र अस्तित्व में भारत की निर्णायक भूमिका रही। स्वयं मुझे बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम में सेवा देने का अवसर मिला। उस वक्त की तमाम यादें मेरे जेहन में आज भी जिंदा है। मुझे भलीभांति याद है कि कैसे दोनों पक्षों के सैनिकों ने नए राष्ट्र के सृजन में अपना रक्त बहाया था। कई बार तो यही पहचान में नहीं आता था कि बलिदानी सैनिक भारतीय है या बांग्लादेशी। हम लोग न केवल उस आततायी के विरुद्ध लड़े, जिसने सभी मानवीय मूल्यों को तिलांजलि दे दी थी, बल्कि हमारा संघर्ष भावी पीढ़ी की समृद्धि को सुनिश्चित करने से भी जुड़ा था। 51 साल पहले दोनों देशों के बीच सीमा की वह रेखा धुंधली पड़ गई थी, जब बांग्लादेश (तब पूर्वी पाकिस्तान) में सताए जा रहे लाखों लोगों के लिए भारत ने अपने दरवाजे खोल दिए थे। भारत उस समय गरीब देश ही था, लेकिन इसके बावजूद उसने इंसानियत और बड़ा दिल दिखाया। भारतीय सेना के मन में कभी ऐसा भाव नहीं आया कि बांग्लादेशी सेना या मुक्ति वाहिनी किसी और देश से जुड़ी है और हमें कभी अहसास नहीं हुआ कि हम किसी दूसरे देश के लिए लड़ रहे हैं। मात्र 12 दिनों

सभी मानवीय मूल्यों को तिलांजलि दे दी थी, बल्कि हमारा संघर्ष भावी पीढ़ी की समृद्धि को सुनिश्चित करने से भी जुड़ा था। ब्रिगेडियर आरपी सिंह : बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना का चार दिवसीय भारत दौरा आरंभ हो गया है। भारत-बांग्लादेश के संबंध बहुत विशिष्ट हैं, क्योंकि बांग्लादेश के स्वतंत्र अस्तित्व में भारत की निर्णायक भूमिका रही। स्वयं मुझे बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम में सेवा देने का अवसर मिला। उस वक्त की तमाम यादें मेरे जेहन में आज भी जिंदा है। मुझे भलीभांति याद है कि कैसे दोनों पक्षों के सैनिकों ने नए राष्ट्र के सृजन में अपना रक्त बहाया था। कई बार तो यही पहचान में नहीं आता था कि बलिदानी सैनिक भारतीय है या बांग्लादेशी। हम लोग न केवल उस आततायी के विरुद्ध लड़े, जिसने की लड़ाई में हमने पाकिस्तानियों के हौसले पस्त करके उन्हें हमेशा के लिए एक ऐसी टीस दी, जिसे वे चाहकर भी नहीं भुला पाते। बीते पांच दशक में कुछ समय के लिए अपवाद को छोड़ दिया जाए तो बांग्लादेश का झुकाव भारत की ओर रहा है। दोनों देशों ने इस दौरान काफी कुछ हासिल किया है। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना के परिवार ने अपनी मातृभूमि के लिए इतना बड़ा बलिदान दिया है, जिसकी मुश्किल से ही दूसरी मिसाल मिलेगी। हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी अपने राष्ट्र के लिए पारिवारिक जीवन का परित्याग कर दिया। इसीलिए मुक्ति संग्राम के हमारे जैसे वेटरंस की आकांक्षाओं की पूर्ति के दृष्टिकोण से दोनों ही आदर्श राष्ट्रप्रमुख है। बतौर प्रधानमंत्री मोदी का कार्यकाल इस मामले में निराश भी नहीं करता।

जीडीपी की विकास दर की निरंतर बनी रहे, तब आराम से आत्मनिर्भर हो जाएगा भारत

आत्मनिर्भर भारत, मुद्रा ऋण, मेक इन इंडिया फॉर वर्ल्ड जैसी क्षेत्रवार लक्षित उत्पादन संबंधी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाओं और रक्षा एवं उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे प्रमुख क्षेत्रों में आयात प्रतिस्थापन जैसी पहलों ने भविष्य के लिए एक मजबूत विकास मंच तैयार किया है। वित्त वर्ष 2022-23 की अप्रैल-जून की तिमाही में देश की सकल घरेलू विकास (जीडीपी) दर 13.5 फीसदी हो गई, जो पिछली चार तिमाहियों में सबसे तेज है। विकास दर में यह तेज वृद्धि कृषि एवं विनिर्माण में सुधार तथा सेवा क्षेत्र के लगभग पूरी तरह से खुल जाने के कारण हुई है। हालांकि, यह वृद्धि अब भी रिजर्व बैंक के हालिया पूर्वानुमान (16.2 फीसदी) से कम है। 51 अर्थशास्त्रियों वाले रॉयटर्स सर्वेक्षण में भी अपने यहां पहली तिमाही में 15.2 फीसदी सालाना विकास दर की भविष्यवाणी की गई थी। इसलिए 13.5 फीसदी का आंकड़ा भले मजबूत दिख रहा हो, लेकिन रिजर्व बैंक एवं बाजार की उम्मीदों से कम है। पिछले साल इसी अवधि में भारत की जीडीपी में 20.1 फीसदी की वृद्धि हुई थी। यह काफी हद तक कोविड-19 और लॉकडाउन के कारण कम आधार रखे जाने के कारण था। इसके चलते अप्रैल-जून 2020 में जीडीपी में -23.8 फीसदी की बहुत तेज गिरावट देखी गई। इस संख्या को संदर्भ में रखने के लिए, आइए, कोविड पूर्व जीडीपी की तुलना जीडीपी पर कोविड के तीन वर्षों के प्रभाव से करते है। अप्रैल से जून, 2018 के दौरान जीडीपी 33.82 लाख करोड़ रुपये थी। यह अप्रैल से जून, 2019 में बढ़कर 35.49 लाख करोड़ रुपये हो गई। जैसे ही कोविड लॉकडाउन ने अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया, अप्रैल से जून, 2020 के दौरान जीडीपी तेजी से गिरकर 27.04 लाख करोड़ रुपये रह गई।

संक्षिप्त समाचार

जयशंकर ने लिज ट्रस को उनके चुनाव जीतने पर दी बधाई

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने मंगलवार को ब्रिटिश विदेश सचिव लिज ट्रस को यूनाइटेड किंगडम के नए प्रधानमंत्री के रूप में चुने जाने पर बधाई दी। जयशंकर ने ट्विटर पर अपने बधाई संदेश में लिखा कि उनके नेतृत्व में भारत-ब्रिटेन की साझेदारी और मजबूत होगी। जयशंकर ने ट्वीट किया कि लिज ट्रस को ब्रिटेन कंजरवेटिव पार्टी का नेता चुने जाने पर बधाई। लिज ट्रस को कंजर्वेटिव पार्टी के नए प्रमुख के रूप में घोषित किया गया है। सैंतालीस वर्षीय लिज ट्रस ब्रिटेन की तीसरी महिला प्रधानमंत्री बनेंगी। लिज ट्रस ने पूर्व चांसलर ऋषि सनक को हराया है। ट्रस को 81,326 वोट मिले जबकि सुनक को 60,399 वोट मिले हैं। अपनी जीत पर ट्रस ने ट्विटर पर लिखा, 'मैं कंजर्वेटिव पार्टी के नेता चुने जाने पर सम्मानित महसूस कर रही हूं। हमारे महान देश का नेतृत्व करने और और मुझ पर भरोसा करने के लिए सभी को धन्यवाद। मैं जिम्मेदार पद पर रहते हुए साहसिक कार्रवाई करूंगी। देश की अर्थव्यवस्था को और बढ़ाऊंगी। साथ ही उन्होंने कहा कि वह यूनाइटेड किंगडम की क्षमता को और अधिक बढ़ाएंगीं। मालूम हो कि एक साथ कई कैबिनेट सदस्यों के इस्तीफे के बाद बोरिस जॉनसन को 7 जुलाई को पीएम पद छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा था। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री के पद की रेस में ऋषि सनक और लिज ट्रस कंजर्वेटिव रैंक तक पहुंचे थे। छह सप्ताह की लंबी आमने-सामने की डिबेट प्रतियोगिता के बाद लिज ट्रस और ऋषि सनक ने ब्रिटेन के लिए अपने दीर्घकालिक दृष्टिकोण के बारे में दुनिया को बताया था। अपने भाषणों में ट्रस ने संकेत दिया कि वह वामपंथियों की पहचान की राजनीति के खिलाफ दृढ़ता से पीछे हटेंगी, क्योंकि उन्होंने घरेलू हिंसा आश्रयों जैसे एकल-सेक्स स्थानों के लिए कानून की कल्पना की है। वहीं, सनक ने देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए वैट में कटौती की वकालत की थी।

ग्राम रामपुर खादर में मंत्री नंद गोपाल गुप्ता उर्फ नंदी संग जेवर विधायक धीरेंद्र सिंह ने लगाई चौपाल

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नोएडा। उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता उर्फ नंदी गौतमबुद्धनगर भ्रमण पर थे। उसी क्रम में मंत्री जी ने ग्राम जलपुरा व मलकपुर में कार्यक्रम करने के बाद जेवर विधानसभा के गांव बीरमपुर के पास स्थित सेक्टर 32 में आज़ादी के बाद पहले नवनिर्मित 77 करोड रुपए की धनराशि से बनकर तैयार हुए 220 केवी बिजली घर का निरीक्षण किया तथा वहां उपस्थित उत्तर प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कॉरपोरेशन लिमिटेड व पश्चिमांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के अधिकारियों को सुचारू विद्युत आपूर्ति उपलब्ध कराए जाने के लिए निर्देशित किया। तत्पश्चात जेवर विधायक धीरेंद्र सिंह द्वारा सुदूर यमुना के किनारे स्थित ग्रामीण अंचल के ग्राम रामपुर खादर में स्थित सपेरों की बस्ती में आयोजित चौपाल में लोगों के बीच पहुंचकर, उनकी समस्याओं को जाना। इस मौके पर जेवर विधायक धीरेंद्र सिंह ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि यह क्षेत्र प्राधिकरण के अंतर्गत आने के बाद यहां प्रधानमंत्री आवासीय योजना लागू नहीं है। सपेरे जाति के लोग पहले सांप दिखाकर, अपना जीवन यापन करते थे, लेकिन पशुक्रूरता अधिनियम लागू होने व अपना रोजगार उजड़ने के बाद ज्यादातर लोग बेरोजगार हो गए हैं, जिन्हें अपने जीवन यापन को लेकर संघर्ष करना पड़ रहा है। यहां तक की प्रधानमंत्री आवासीय योजना जैसी अति महत्वपूर्ण योजना के लिए लाभ भी प्राधिकरण क्षेत्र में नहीं मिल पा रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता उर्फ नंदी ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि समाज के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति के हितों की चिंता करना ही, देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ का ध्येय है। इसी ध्येय को पूरा करने के लिए लोगों की बुनियादी सुविधाओं को वरीयता से मुहैया कराया जा रहा है।अंत में जेवर विधायक धीरेंद्र सिंह ने ग्रामीणों को आश्वस्त करते हुए कहा वि प्राधिकरण क्षेत्र में आने वाले लाभार्थियों को प्रधानमंत्री आवासीय योजना जैसी अति महत्वपूर्ण योजना का लाभ आने वाले समय में मिलेगा।इस मौके पर यमुना एक्सप्रेस वे औद्योगिक विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालक अधिकारी अरुणवीर सिंह, अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्रीमती मोनिका रानी, शैलेंद्र भाटिया, मेहराम सिंह, राजवीर सिंह, विकास सिंह, बीडी शर्मा, सुभाष चंद्रा, योगेंद्र भाटी, राजेंद्र भाटी आदि अधिकारी भी मौजूद रहे।

इनरव्हील कल्ब वीरांगना झांसी द्वारा शिक्षक दिवस पर शिक्षिकाओं का सम्मान समारोह

(आधुनिक मसाचार सेवा)
झाँसी। इनरव्हील क्लब वीरांगना झाँसी द्वारा एक होटल में शिक्षक दिवस पर शिक्षिकाओं के सम्मान समारोह का आयोजन किया। जिसमें श्वेता पांडे, नीति शास्त्री, रजिया खान, नीलम मिश्रा, श्वेता पांडे शिक्षिकाओं का सम्मान किया गया। शिक्षिकाओं को सदर विधायक की पतनी सुनीता शर्मा और क्लब अध्यक्ष ममता यादव, रेखा अग्रवाल द्वारा सम्मान पत्र व पौधे देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर रश्मि अग्रवाल, उमा गुप्ता, सुषमा सिंघल, शुभ्रा कनकने, सीमा गुप्ता, सुषमा अग्रवाल, अंजू शर्मा, निर्मल अग्रवाल, श्रद्धा सोनी, आशु शर्मा, सुनीता राय, रजनी गुप्ता, श्वेता वर्मा, सारिका, आभा, बबीता, रंजना मोदी सुनीता सिजरिया, निहारिका त्रिपाठी आदि सदस्याएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के अंत में क्लब सचिव डॉ. इंदु सक्सेना ने सभी का आभार व्यक्त किया।

कोनरवा अध्यक्ष ने की राज्यसभा सदस्य सुरेंद्र नगर से नोएडा की समस्या पर चर्चा

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नोएडा। कनफिडिरेशन ऑफ एनसीआर रेजिडेन्टस् वेलफेयर एसोसियेशन के अध्यक्ष पी. एस. जैन व कोषाध्यक्ष एम. एल. शर्मा द्वारा राज्य सभा सदस्य सुरेन्द्र सिंह नागर से उनके दिल्ली स्थित निवास पर शिष्ठाचार भेंट की गई तथा शहर की अनेक समस्याओ जैसे नौएड़ा की भूमी को फ्री होल्ड किया जाना व शहर की अनेको समस्याओ पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। जिसमें उन्होने विशेष रूची दिखाई तथा नौएड़ा की भूमी के फ्री होल्ड के समबंध में सभी तथ्यो को जानने के बाद उन्होने इसे नौएड़ा की जनता कि उपयुक्त मांग मानते हुऐ कहा की शीघ्र ही इस विषय पर सीधे मुख्यमंत्री योगी से वार्ता करेगें तथा इसे पूरा कराने के लिए प्रयास करेंगे। अन्य समस्याओ के समबंध में भी उन्होने चर्चा के अनुरूप हर समस्या का अलग अलग विस्तृत पत्र देने को कहा तथा आश्वस्त किया की जनता से जुड़ी सभी समस्यओं को एक एक करके पूरी कराने का प्रयास करेंगे। उसके लिए जिस स्तर पर भी आवश्यकता होगी वे वार्ता करेंगे तथा मांग उठायेंगे तथा सम्बंधित विभाग से कोनरवा के प्रतिनिधि मंडल के साथ वार्ता करायेंगे।

जिंदगी है यह माटी की,माटी का नाम लाएगी

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली। ईस्ट एंड क्लब सूरजमल विहार दिल्ली में एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें जनपद के वीर रस के सुप्रसिद्ध कवि डॉ0रणजीत सिंह ने अपनी कविताओं से न केवल राष्ट्रीय चेतना को प्रवाहित करते हुए श्रोताओं को रोमांचित किया बल्कि आयोजन समिति द्वारा उनका सारस्वत सम्मान किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दिल्ली के शिक्षक संघ के अध्यक्ष राजवीर यादव ने किया।मनीषा शुक्ला की सरस्वती वंदना से कवि सम्मेलन का औपचारिक शुभारंभ हुआ।इसके बाद अलीगढ़ के हास्य कवि वेद प्रकाश मणि ने अपनी हास्य की रचनाओं से श्रोताओं को खूब हँसाया व गुदगुदाया तो भदोही के कवि संदीप कुमार बालाजी ने नारी पर रचना सुना कर वाहवाही लूटी। वीर रस के सुप्रसिद्ध कवि डॉ0 रणजीत सिंह ने अपने काव्य पाठ के दौरान जवानों,राष्ट्र भक्तों,बलिदानियों का गुणगान किया।श्रोताओं ने भारत माता की जय कार व काव्यपाठ के दौरान माल्यार्पण कर उनकी कविता का समर्थन किया।उन्होंने इन पंक्तियों से काव्य पाठ का शुभारंभ किया- हुई है गर सुबह कुछ ही पलों में शाम आएगी।जिंदगी है यह माटी की माटी का नाम लाएगी।।'वतन के दीवाने हैं,हम वतन के गीत गाते हैं,वतन की एकता के हम सदा किस्से सुनाते हैं, पंक्तियों से उन्होंने राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता का स्वर मुखरित करना शुरू किया। इसके अलावा आयोजक कुमार विवेक की कविताओं को लोगों ने मन से सुना तो देश की प्रसिद्ध कवयित्री डॉ0अंजना कुमार के गीतों और गजलों ने लोगों का मन मोह लिया। लगभग 15 कवि/कवयित्रियों ने इस कवि सम्मेलन में अपनी कविताओं का वाचन किया।डॉ0रणजीत सिंह को गौरव विवेक,प्रो0मोती लाल चतुर्वेदी, डॉ0 अंजना कुमार आदि ने सम्मानित किया।कार्यक्रम का सुघर संचालन योगेंद्र सुंद्रियाल ने किया। बस्ती के राम कृष्ण लाल जगमग,अकमल बलरामपुरी, हरियाणा के सुनील शर्मा आदि ने सरस काव्य पाठ किया। अध्यक्षता ज्ञानेंद्र दीपक द्विवेदी ने किया।

बीआईटी में हुआ टोस्टमास्टर्स लीडरशिप कॉन्क्लेव का आयोजन

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नोएडा।बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेकनेलॉजी, नोएडा परिसर के सहयोग से डिवीजन डी, ई एंड एफ के संयोजन के साथ टोस्टमास्टर्स लीडरशिप कॉन्क्लेव का आयोजन किया गया है। टोस्टमास्टर्स लीडरशिप कॉन्क्लेव का उद्देश्य टोस्टमास्टर्स के बारे में प्रचार करना और संचार और नेतृत्व की कला को प्रोत्साहित करना है। ताकि लोग सशक्त हों और स्वयं को बेहतर बनने में स्वयं की सहायता करें। टोस्टमास्टर्स इंटरनेशनल एक गैर-लाभकारी शैक्षिक संगठन है जो क्लबों के विश्वव्यापी नेटवर्क के माध्यम से सार्वजनिक बोलने (पब्लिक स्पीकिंग) और नेतृत्व कौशल (लीडरशिप स्किल्स) सिखाता है। एंगलवुड, कोलोराडो में मुख्यालय, संगठन की सदस्यता 149 देशों में 16,600 से अधिक क्लबों में 350,000 से अधिक है। 1924 से, इसने 126 डिस्ट्रिक्ट में फैले क्लबों के अपने विश्वव्यापी नेटवर्क के माध्यम से लोगों को अधिक आत्मविश्वासी वक्ता, संचारक और नेता बनने में मदद की है। कॉन्क्लेव ने टोस्टमास्टर्स के मूल्य को प्रदर्शित करने के लिए पूर्व डिस्ट्रिक्ट चैंपियंस द्वारा शैक्षिक / पावर टॉक सत्रों की मेजबानी की। डिस्ट्रिक्ट डायरेक्टर और पास्ट डिस्ट्रिक्ट चैंपियन अयान पाल, डीटीएम, जो आईबीएम में सीनियर कंसल्टेंट हैं और आईबीएम से मान्यता प्राप्त आईटी प्रोफेशनल, एजुकेटर, स्पीकर, और लेखक को 20 टाइटल्स के साथ टोस्टमास्टर्स के मिशन और विजन के बारे में बताया गया है और इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे विश्वास, कार्य और आगे बढ़ने की क्षमता आपको आपका सपना हासिल करने में मदद करती है। टोस्टमास्टर्स का क्लब मिशन है ठहम एक सहायक और सकारात्मक सीखने का अनुभव प्रदान करते हैं जिसमें सदस्यों को अपने संचार और नेतृत्व कौशल को विकसित करने का मौका दिया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप एक महान आत्मविश्वास और व्यक्तिगत विकास होता है अन्य सम्मानित वक्ताओं में डिस्ट्रिक्ट कार्यक्रम गुणवत्ता निदेशक और पूर्व डिस्ट्रिक्ट चैंपियन कौशिक भट्टाचार्य, डीटीएम, एक कंप्यूटर इंजीनियर, कवि, लेखक, एंकर, सार्वजनिक वक्ता शामिल हैं, जिन्हें विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों में एक दशक से अधिक का अनुभव है। जिन्होंने गुणवत्तापूर्ण भाषणों और प्रस्तुतियों को तैयार करने और वितरित करने पर अपने बहुमूल्य विचारों और तकनीकों को साझा किया। आईबीएम जीआईसी प्रैक्टिस लीडर और मास्टर आविष्कारक, दीपक गुप्ता सम्मानित अतिथि थे। दीपक गुप्ता, जिनके नाम से 23 पेटेंट है, ने रचनात्मकता को जीवन बदलने वाले कौशल के रूप में विकसित करने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि कैसे टोस्टमास्टर्स के रूप में हमें अपने लिए बनाई गई हर चीज पर गर्व होना चाहिए और इस मंच का उपयोग दूसरों के जीवन को समृद्ध बनाने के लिए करना चाहिए। मुख्य वक्ता (कॉपीरेट) श्री सुधीर शर्मा ने पेशेवर जीवन में सार्वजनिक बोलने और नेतृत्व का महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए ।रूपिंदर सिंह, डीटीएम, वर्ल्ड चैंपियन ऑफ पब्लिक स्पीकिंग के सेमीफाइनलिस्ट में से एक ने दिखाया कि एक गतिशील वक्ता होने के लिए क्या आवश्यक है। हास्य भाषण डिस्ट्रिक्ट प्रतियोगिता फाइनलिस्ट स्मिता सेनगुप्ता ने हास्य भाषण को श्रेय देते हुए बताया कि कैसे हास्य जीवन बदल रहा है, जो टोस्टमास्टर्स का एक उनन्त मॉड्यूल हसभी प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों द्वारा टोस्टमास्टर्स और वर्तमान कॉपीरेट रुझानों और व्यक्तिगत जीवन में व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर एक पैनल चर्चा एक बड़ी सफलता थी। बीआईटी नोएडा के प्रतिष्ठित निदेशक प्रो. (डॉ.) एस.एल. गुप्ता, सम्मानित डीन और बीआईटी नोएडा के संकाय सदस्यों विशेष रूप से डॉ सुपर्णा दत्ता ने इस आयोजन के लिए अपना मजबूत समर्थन दिया है। डिवीजन निदेशक योगेश उपाध्याय और वंदिता शुक्ला इस समारोह के मुख्य आयोजक थे।टुगेदर टुवर्ड्स टुमॉरो' के विजन के साथ, डिस्ट्रिक्ट-124 का उद्देश्य सदस्यों को अधिक प्रभावी संचारक और नेता बनने के लिए सशक्त बनाने के लिए एक स्थायी विकास मंच बनाना है। उनका सामूहिक उद्देश्य जिला 124 के सदस्यों को संचारकों और नेताओं के रूप में जहां वे हैं और जहां वे बनना चाहते हैं, के बीच की खाई को पाटने में सक्षम बनाना है, और एक ही साझा सपना है - मापने योग्य उत्कृष्टता प्राप्त करने और आगे बढ़ने का।

लायंस कल्ब नोएडा ने 32वें अधिष्ठापन समारोह पर ज़रूरतमंद को भेंट की एक तिपहिया साइकल

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नोएडा। लायंस क्लब नोएडा का अधिष्ठापन समारोह मंडलाध्यक्ष लायन रजनीश गोयल की आधिकारिक यात्रा के अवसर पर नए लायन साथियों का शपथ समरोह के साथ शिक्षक सम्मान समारोह का भी आयोजन किया गया। लायन रचना यादव एवं उनकी टीम को मंडलाध्यक्ष प्रथम लायन पंकज बिजलवान ने 2022-23 के लिए अधिष्ठापीत किया। आधिकारिक यात्रा पर आए मंडलाध्यक्ष लायन रजनीश गोयल ने क्लब द्वारा किए गए कार्यों की प्रसंशा करते हुए लायन रचना यादव को बधाई दी। उन्होंने अपने भाषण में डिस्ट्रिक्ट और इंटरनेशनल द्वारा दी जाने वाली सभी सहायता के लिए आश्वासन दिया।एक जरूतमंद व्यक्ति को तीन पहिया रिक्शा भी प्रदान किया गया मंडलाध्यक्ष द्वितीय ए के मित्तल ने लायंस क्लब नोएडा परिवार में शामिल हुए 10 नए सदस्यों को शपथ दिलाई जिनमें रचना यदुवंशी, डा निधि शर्मा, अनंत शर्मा, अमरीश भाटी, राजेंद्र शर्मा, सुधीर शर्मा, आनंद शर्मा, श्रीमती सुष्मिता शर्मा एवम श्रीमती अंजना गुप्ता ने क्लब में शामिल होने की शपथ ली।शिक्षक सम्मान समारोह में लायंस क्लब नोएडा द्वारा प्रतिष्ठित शिक्षको को उनके कार्य के लिए सम्मानित किया गया जिनमे से प्रमुख डा मृदुला सेठ, प्रोफेसर डा राजीव कुमार शर्मा, डा अपर्णा खनन , श्रीमती मधु गुप्ता, डा प्रीति राय, डा ईशा वर्मा, राजेश कुमार, प्रिंस शर्मा, श्रीमती आयुषी गुप्ता और प्रिया कुमारी रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ क्लब के अध्यक्ष आदित्य श्रीवास्तव और उनकी टीम के अववाहन पर डिस्ट्रिक्ट और मल्टीपल से आए सभी सम्मानित अतिथियों , मुख्य अतिथि रजनीश गोयल, मुख्य वक्ता लायन विनय मित्तल, अधिस्थापन अधिकारी उपमंडलाध्यक्ष प्रथम लायन पंकज बिजलवान, इंडक्शन अधिकारी उपमंडलाध्यक्ष द्वितीय लायन ए के मित्तल एवम अन्य पूर्व मंडलाध्यक्ष लायन अरुण मित्तल, लायन सुनील निगम, लायन संजीव अग्रवाल, लियो लायन गौरव गर्ग ने दीप प्रज्वलन कर किया।कार्यक्रम का संचालन लायन डा निमेष कुमार और लियो लायन शिवानी पांडे ने किया। कार्यक्रम में गणेश वंदना, सामूहिक गीत जैसे सांस्कृतिक प्रस्तुति भी थी।कार्यक्रम के दौरान नव अधिष्ठापीत अध्यक्ष रचना यादव ने क्लब के द्वारा एक सामूहिक किचन की शुरुवात की श्रीमती मीनाक्षी सिंह की रविंद्र सिंह मेमोरीयल ट्रस्ट ने ओरबो के साथ मिल कर क्लब को अंगदान की प्रतिज्ञा दिलाई! लायन राजेश सिंघल,लायन साधना सिंघल एवं शिव रत्तन भोलसारिया ने पूर्ण अंगदान किया। इस अवसर पर लायंस क्लब नोएडा के लायन सी. एस. भोगल, लायन तरुण चौहान सचिव, लायन रघुनंदन सिंह यादव, लायन मान सिंह चौहान, लायन आई. आर छाबड़ा, लायन मुकुल वाजपेयी, लायन दर्शनानंद गौर, लायन आर.के ग्रोवर, लायन नरेश चौहान, लायन नरेंद्र कुच्छल, लायन उमेश कुमार, डॉ पवन यादव जी, राधा यादव आदि काफी तादाद में सदस्य गण उपस्थित थे।

पॉकेट 7 सेक्टर 82 में धूमधाम से मनाई गई राधाष्टमी

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नोएडा। ईडबल्यूएस पॉकेट सात सेक्टर 82 स्थित मंदिर में भक्तों द्वारा राधा जी का प्राकट्य उत्सव राधा अष्टमी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर पंडित विनोद मिश्र द्वारा राधा जी की विधि विधान से पूजा कराई गई। राधा जी के सुंदर भजन प्रस्तुत किये गये, देर रात तक चले कार्यक्रम में भक्तों ने प्रेम रस से सराबोर हो नृत्य करते राधा जी का प्राकट्य उत्सव मनाया।
इस अवसर पर राघवेंद्र दुबे ने बताया कि राधा जी को माता लक्ष्मी की अवतार माना जाता है। भाद्रपद के शुक्लपक्ष की अष्टमी को राधा जी का प्राकट्य उत्सव मनाया जाता है। राधा जी की पूजा भगवान कृष्ण के साथ ही की जाती है । राधा कृष्ण को प्रेम की प्रतिमूर्ति माना जाता है इसलिए दोनों की आराधना एक साथ ही की जाती है। राधा अष्टमी की पूजा व व्रत से पापों का नाश होता है साथ ही लक्ष्मी की प्राप्ति व निःसंतान को सन्तान की प्राप्ति भी होती है।

राधा जी को पुष्प माला अर्पित की गई। राधा जी के साथ भगवान कृष्ण की भी पूजा अर्चना की गई। राधा कृष्ण के युगल रूप को भोग अर्पित कर आरती हुई। इस अवसर पर मंदिर परिसर को गुब्बारों व लाइटों से सजाया गया । सायं 6 बजे से भजन संध्या का शुभारंभ हुआ जिसमें प्रसिद्ध गायकों द्वारा भगवान कृष्ण व

प्रवीण नेट्टारू हत्याकांड मामले में एनआईए ने शुरू की जांच

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली। कर्नाटक में भाजपा युवा मोर्चा के हत्या के मामले में जांच तेज हो गई है। प्रवीण नेट्टारू हत्याकांड मामले में मंगलवार को राष्ट्रीय जांच एजेंसी (र्ड़ि) ने मंगलुरु में दो दर्जन से अधिक स्थानों पर छापेमारी की। एनआईए की यह छापेमारी अभी भी जारी है। एनआईए की कई टीमें 32 वर्षीय भाजपा युवा मोर्चा के नेता प्रवीण नेट्टारू की हत्या की जांच में लगी हुई हैं। वहीं, आज मंगलुरु में एनआईए की टीमें दक्षिण कनन्ड़ जिले के पुत्तूर और सुलिया में संदिग्धों के परिसरों की तलाशी ले रही हैं। राष्ट्रीय जांचए एजेंसी ने यह कदम दक्षिण कनन्ड़ पुलिस द्वारा एक सीए को गिरफ्तार करने के लगभग एक महीने बाद उठाया है। जट्टीपल्ला हाउस सुलिया के अब्दुल कबीर पर अगस्त में नेट्टारू की हत्या की योजना बनाने का आरोप लगा था।26 जुलाई को एक वाहन में तीन लोग आए और मंगलुरु के बेल्लारे में पुत्तूर-सुलिया रोड पर नेट्टारू की चिकन की दुकान के बाहर उसकी हत्या कर दी थी। पुलिस ने 28 जुलाई को सावनूर के 29 वर्षीय जाकिर और बेल्लारे के 27 वर्षीय शफीक को गिरफ्तार किया था। इस मामले में 2 अगस्त को पुलिस ने 32 वर्षीय सद्दाम और 42 वर्षीय हारिस को गिरफ्तार किया था। ये दोनों ही बेल्लारे के पल्लीमाजालु के रहने वाले थे। बताया जा रहा है कि ये चारों ही हमलावरों के संपर्क में थे। 7 अगस्त को पुलिस ने सुलिया के 22 वर्षीय आबिद और बेल्लारे के 28 वर्षीय नौफाल को गिरफ्तार किया था। इन्हें योजना और रेकी टीम का हिस्सा बताया जा रहा था। वहीं, इस मामले में राज्य सरकार के अनुरोध के बाद केंद्रीय गृह मंत्रालय ने 3 अगस्त को मामले को एनआईए को स्थानांतरित करने का आदेश दिया था।

7 दिनों तक पंकज त्रिपाठी ने खाई थी जेल की हवा

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली । पंकज त्रिपाठी ने अपने अभिनय के दम पर इंडस्ट्री में अपनी खुद की एक अलग पहचान और जगह बनाई है।पूरे देशभर में उनके चाहने वालो की कोई कमी नहीं है।

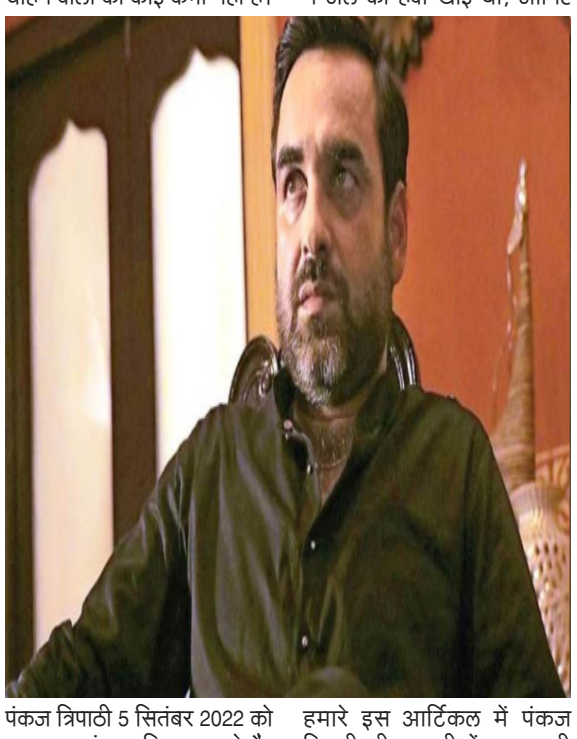

पंकज त्रिपाठी 5 सितंबर 2022 को अपना 46वां जन्मदिन मना रहे हैं। पंकज त्रिपाठी वैसे तो बहुत ही शांत स्वभाव के हैं, लेकिन खुद पंकज त्रिपाठी ने कपिल शर्मा के शो में ये खुलासा किया था कि जब वह कॉलेज में थे तो उन्हें सात दिनों के लिए जेल जाना पड़ा था। आखिर क्यों शांत दिखने वाले पंकज त्रिपाठी ने जेल की हवा खाई थी, जानिए हमारे इस आर्टिकल में पंकज त्रिपाठी की हाल ही में एक पुरानी वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। यह वीडियो कपिल शर्मा शो के दौरान की है, जहां कपिल पंकज त्रिपाठी को ये कहते हुए नजर आ रहे है कि आपके बारे में ये अफवाह है कि आप कॉलेज के दिनों में सात दिन जेल की हवा भी खा चुके हैं। कपिल ये अफवाह सुनकर खुद भी हैरान रह गए। इस अफवाह का जवाब देते हुए पंकज त्रिपाठी ने कपिल को कहा, 'ये कोई अफवाह नहीं है बल्कि सच है'। ये सुनकर कपिल ने फटाक से जेल जाने की वजह पूछी तो पंकज त्रिपाठी ने जवाब देते हुए कहा, 'छात्र राजनीति में इनकी तरह मैं भी था। मुझे बहुत पिटाई लगी थी, क्योंकि पुलिस वालों को मारने का तरीका मालूम होता है। वह ऐसे मारते है कि फैक्चर हो, देखिए क्या पॉलिटिक्स है'। कपिल ने आगे पंकज त्रिपाठी से पूछा कि क्या आप पॉलिटिक्स में जाना चाहते थे। इस बात का जवाब सुनने के बाद पंकज त्रिपाठी ने कहा, 'जब आप नौजवान होते हैं तो कही न कहीं जरुर जाना चाहते हैं और मैं भी ऐसा था। पंकज त्रिपाठी की ये बात सुनकर सोशल मीडिया पर लोग अपनी हंसी नहीं रोक पा रहे हैं। पंकज त्रिपाठी के आगामी प्रोजेक्ट्स की बात करें तो वह अक्षय कुमार की फिल्म 'ओह माय गॉड' 2 में नजर आने वाले है।

केआरके की गिरफ्तारी को शत्रुध्न सिन्हा ने बताया साजिश, कहा- सेल्फ मेड मैन

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली । एक्टर और क्रिटिक केआरके की मुसीबतें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। मंगलवार को मलाड पुलिस ने उन्हें विवादित ट्वीट्स करने के लिए गिरफ्तार किया था। आपको बता दें कि कमाल राशिद खान उर्फ केआरके को एक नहीं बल्कि कई आरोपों के चलते 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में कोर्ट के फैसले के बाद भेजा गया है। लेकिन उनके इन सभी विवादों

के बीच अब दिग्गज अभिनेता शत्रुघन सिन्हा केआरके के समर्थन में सामने आए है और उन्होंने ट्वीट करते हुए कमाल राशिद खान की गिरफ्तारी को एक साजिश बता दिया हैशत्रुघन सिन्हा ने सोमवार को केआरके की गिरफ्तारी के बाद उनका समर्थन किया और उनकी तारीफ करते हुए एक नहीं बल्कि कई ट्वीट्स किए। शत्रुघन सिन्हा ने कमाल राशिद खान का समर्थन करते हुए लिखा, 'किसी को ये बात नहीं भूलनी चाहिए कि कई विरोधी और संघर्षों के बावजूद कमाल राशिद खान एक सेल्फ मेड मैन हैं। उन पर सर्वशक्तिमान का आशीर्वाद है। उन्होंने फिल्म इंडस्ट्री के साथ-साथ समाज में भी अपनी मेहनत के दम पर अपनी एक अलग जगह बनाई है। उनकी सबसे बड़ी संपत्ति उनका आत्मविश्वास है। वह बिना किसी का पक्षपात किए निडर होकर अपनी बात कहते हैं'। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए शत्रुघन सिन्हा ने लिखा, 'वह कई बाधाएं आने के और कई विरोधी होने के बावजूद भी अपनी बात कहने से नहीं कतराते हैं। उन्हें कानून के दायरे में रहकर अपनी कोई भी बात कहने का पूरा-पूरा अधिकार है चाहे वह लोग स्वीकार करें या ना करें'। शत्रुघन सिन्हा ने अपने अगले ट्वीट में लिखा, 'ऐसा लगता है कि वह किन्हीं परिस्थितियों की साजिश का शिकार हुए हैं। भगवान उन पर कृपा बनाए। मैं उम्मीद करता हूं और ये दुआ करता हूं कि कमाल राशिद खान को जल्द से जल्द न्याय मिले जिसके वह हकदार हैं।

आर बल्की की फिल्म चुप के लिए संगीतकार बने अमिताभ बच्चन

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली । हिंदी सिनेमा के बेहतरीन निर्देशक आर बल्की जल्द ही चुप- रिवेंज ऑफ आर्टिस्ट लेकर आने वाले हैं। ये एक मिस्ट्री थ्रिलर

फिल्म होगी, जिसमें सनी देओल, दुलकर सलमान और पूजा भट्ट मुख्य भूमिकाओं में नजर आने वाली है। उनकी ये फिल्म इसी महीने 23 सितंबर को रिलीज होने वाली है। अब इस साइकोलोजिकल थ्रिलर फिल्म को लेकर एक बड़ा अपडेट सामने आ रहा है, जिसमें दावा किया जा रहा है कि अमिताभ बच्चन ने इस फिल्म के लिए म्यूजिक कंपोजर बने हैं, जी हां आप सही पढ़ रहे हैं। अमिताभ बच्चन बीते दिनों में इंडस्ट्री के हर क्षेत्र में लगभग अपना हाथ अजमा चुके है। अब उन्होंने आर बल्की फिल्म के लिए म्यूजिक दिया है। इस बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, ये सब बहुत ही अचानक हुआ। मैंने अमित जी को फिल्म चुप देखने के लिए कहा था। इसे देखने के बाद, उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और उन्होंने मुझे अपने पियानों पर एक धुन बजाई कर दिखाई और कहा कि फिल्म और किरदारों ने उन्हें ऐसा महसूस कराया। मैं इसको सुनने के बाद बहुत ही उत्साहित था और मैंने पूछा कि क्या मैं इस धुन का इस्तेमाल कर सकता हूं और उन्होंने तुरंत इसे फिल्म के लिए गिफ्ट कर दिया। साथ ही उन्होंने कहा, चुप पहली ऐसी फिल्म है जिसे क्रेडिट स्कोर के रूप में अमितजी ने आधिकारिक तौर पर अपनी बनाई हुई धुन दी है। चुप आर बाल्की की पहली एक्शन थ्रिलर स्टाइल की फिल्म है। आर बाल्की द्वारा निर्देशित इस फ़िल्म निर्माण होप प्रोडक्शंस और राकेश झुनझुनवाला प्रणब कपाडिया द्वारा किया जा रहा है और अमित त्रिवेदी ने म्यूजिक दिया है। आपको बता दें कि इस फिल्म की स्क्रिप्ट को खुद आर बाल्की ने लिखी है। वहीं फिल्म के स्क्रिन प्ले और डायलॉग को आर बाल्की, राजा सेन औ? ऋषि विरमानी द्वारा लिखा गया है।

दिल्ली के रीगल सिनेमा में जब डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने देखी थी गुरु दत्त की 'कागज के फूल'

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली । भारतीय सिनेमा के शुरुआती दौर में कई फिल्ममेकर्स ऐसे हुए, जिन्होंने वक्त से आगे का सिनेमा रचा और गढ़ा। उनकी फिल्में 50 के दौर में जितनी सामयिक थीं, उतनी ही अहमियत आज भी है। ऐसे ही फिल्मकारों में नाम लिया जाता है गुरु दत्त का। आजादी के सिर्फ छह साल बाद 1951 में बाजी से अपने निर्देशकीय करियर की शुरुआत करने गुरु दत्त ने हिंदी सिनेमा को कागज के फूल और प्यासा जैसी फिल्मों दी हैं, जो आज भी अपनी सिनेमाई वैल्यू के लिए जानी जाती हैं और सिनेमा के विद्यार्थी इन फिल्मों को क्राफ्ट की गहराई समझने के लिए देखते है फिल्ममेकिंग के स्टूडेंट्स के लिए 'मास्टर क्लास' कागज के फूल से देश के दूसरे राष्ट्रपति और शिक्षाविद डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन से भी गहरा संबंध है, जिनका जन्म दिवस 5 सितम्बर को टीचर्स डे के रूप में मनाया जाता है। गुरु दत्त की कागज के फूल और डॉ. राधा कृष्णन के बीच संबंध दिखाने वाली तस्वीर आज टीचर्स डे के मौके पर ट्विटर पर सर्कुलेट हो रही है। रीगल सिनेमा में हुई थी स्क्रीनिंग यह तस्वीर 25 सितम्बर, 1959 की है, जब कागज के फूल की स्क्रीनिंग दिल्ली के रीगल सिनेमा हॉल में आयोजित की गयी थी और खुद डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन इसमें शामिल हुए थे। तस्वीर में गुरु दत्त, डॉ. राधाकृष्णन का स्वागत करते नजर आ रहे है। एक जनवरी 1959 को रिलीज हुई कागज के फूल में गुरु दत्त और

वहीदा रहमान ने मुख्य भूमिकाएं निभायी थीं। इस फिल्म को भारतीय सिनेमा में तकनीकी रूप से एक क्रांति के रूप में जाना जाता है। खासकर, सिनेमैटोग्राफी के क्षेत्र में कागज के फूल मील का एक पत्थर की तरह है। फिल्म को 80 के दौर में दुनिया की कल्ट क्लासिक फिल्मों की लिस्ट में शामिल किया गया था। दिलचस्प बात यह कि रिलीज के कई साल बाद कल्ट क्लासिक बनी कागज के फूल क्रिटिकली और कमशिय्ली फ्लॉप रही थी। इस फिल्म की नाकामयाबी ने गुरु दत्त को बर्बाद करके रख दिया था। इसके बाद गुरु दत्त ने बतौर निर्देशक कोई फिल्म नहीं की।कागज के फूल एक कामयाब फिल्ममेकर के आसमान से जमीन पर गिरने की कहानी है।

संगीतज्ञ येसुदास के गाए गीत 'जब दीप जले आना

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली । अगर आप हिंदी फिल्म गीतों के शैदाई हैं और कभी रेडियो पर येसुदास का गाया 'जब दीप जले आना' (चितचोर) सुना है तो क्या कभी यह सोचकर ठिठके होंगे कि इसे भारतीय शास्त्रीय संगीत के बहुप्रचलित राग

यमन पर आधारित करके रचा गया? अकसर संगीत की दुनिया में यह होता है कि हम शास्त्रीयता की जमीन पर मौजूद ढेरों रागों को भले ही उनके मूल स्वरूप में पहचानते न हों, मगर उन पर आश्रित किसी गीत, भजन या गजल से परिचित होते हैं। राग यमन भी ऐसा ही राग है, जिसकी महत्वपूर्ण बात यह है कि ज्यादातर हिंदुस्तानी संगीत घरानों में इसी राग से संगीत विद्याथिर्यों की शिक्षा आरम्भ की जाती है। शायद ही कोई संगीत सीखने वाला व्यक्ति ऐसा होगा, जो इस राग की प्रसिद्ध बन्दिश 'सखी ए री आली पिया बिन' जानता न हो। अपनी कर्णप्रियता और सौन्दर्यबोध में अनुपम राग, जिसे 'इमन' भी पुकारा जाता है। मूल रूप से कल्याण थाट का राग, जिसमें तीव्र मध्यम को छोड़कर सारे शुद्ध स्वर लगते हैं। अधिकांश संगीत घरानों में यह मुहावरा प्रचलित रहा- 'इमन बजा कि मन बजा'। आशय यह कि यमन को वाद्यों पर छेड़ते समय कलाकार का मन बज उठता है प्रख्यात संगीतकार गोविन्दराव टेम्बे ने यह स्थापित किया कि यमन और कल्याण एक ही राग है, जिनमें बहुत कम भिनन्ता है। हालांकि, दोनों मध्यम के प्रयोग करने पर इसे 'यमन कल्याण' कहा जाता है। आक्सफोर्ड इनसाइक्लोपीडिया आफ म्युजिक आफ इंडिया में वर्णित है कि कर्नाटक संगीत में कल्याण थाट से निर्मित, यमन से मिलता राग 'यमुना कल्याणी' मौजूद है। यमन या कल्याण का महत्व यह भी है कि ये एक रागांग राग माना जाता है। मराठी नाट्य संगीत हो या उत्तर भारत का भक्ति संगीत, हिंदी फिल्मी संगीत याकि सुगम संगीत का क्षेत्र-हर जगह अपने मूल रूप, किसी जोड़ राग (यमनी बिलावल, पूरिया कल्याण) के साथ या मिश्र रागों की संगति में यमन शामिल रहा है। उस्ताद बड़े गुलाम अली खां को लेकर एक किस्सा मशहूर है कि एक बार वे अपने कन्सर्ट, जो लक्ष्मीबाग, गिरगांव, मुंबई में होने वाला था, शाम को राग यमन गाने वाले थे। उसी दिन सुबह वे राग का अभ्यास अपने मनोभावों में कर रहे थे, तब तक पास के फ्लैट से रेडियो पर लता मंगेशकर की आवाज में 'बहाना' फिल्म का गीत उनके कानों तक पहुंचा- 'जा रे बदरा बैरी जा, रे जा रे'। खां साहब का मन इस गाने की ओर बरबस चला गया और वे गीत सुनने में डूब गए। गीत की समाप्ति के बाद उस्ताद थोड़े खिनन व अन्यमनस्क हो उठे। कुछ सोचते हुए अपने शिष्यों से बोले- 'जब से इस लड़की का यमन मेरे कानों में पड़ा है, मैं अपना यमन भूल गया हूं।' फिल्म संगीत में यमन के कुछ बेहतरीन उदाहरण हैं- 'चन्दन सा बदन' (सरस्वतीचन्द्र), 'आंसू भरी हैं ये जीवन की राहें' (परवरिश), 'वो शाम कुछ अजीब थी' (खामोशी), 'ये क्या जगह है दोस्तो' (उमराव जान) और 'निगाहें मिलाने को जी चाहता है' (दिल ही तो है) एक राग, जो शाम के वक्त भले गाया-बजाया जाता हो, अपने माधुर्य में दिनभर विभोर रखता है।

सोनम कपूर के मां बनने से हैरान हैं भाई अर्जुन कपूर, भांजे के आने की बात पचा नहीं पा रहे हैं एक्टर

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली । पिछले महीने सोनम कपूर और उनके पति आनंद आहूजा ने अपने घर एक बेटे का स्वागत किया। बच्चे के आने से पूरे कपूर खानदान में खुशी की लहर है। सोनम की बहन रिया कपूर तो अब तक कई बार अपने मासी बनने की खुशी सोशल

मीडिया पर जाहिर कर चुकी है। उनके पोस्ट देखकर तो लगता है कि बहन से ज्यादा तो उन्हें भांजे से प्यार है। वहीं, अब नए-नए मामा बने अर्जुन कपूर ने भी सोनम के मां बनने पर रिएक्ट किया है और काफी हैरान नजर आ रहे हैं। अर्जुन कपूर ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम अकाउंट पर सोनम और अपनी एक तस्वीर शेयर की है जब वे प्रेगनेंट थीं। तस्वीर में दोनों साथ में बैठे हुए नजर आ रहे हैं। सोनम ब्लैक गाउन में बेहद खूबसूरत लग रही हैं, जबकि अर्जुन रस्ट कलर के सूट में हैंडसम लग रहे है। सोनम अपने बेबी बंप पर प्यार जता रही हैं तो अर्जुन उन्हें देखकर मुस्कुरा रहे हैं। पोस्ट के कैप्शन में अर्जुन अपनी हैरानी जता रहे हैं कि उनकी छोटी-सी बहन कितनी बड़ी हो गई है और अब तो वो खुद एक बच्चे की मां बन चुकी है। एक्टर ने कैप्शन में लिखा, 'देखो ये कौन है जो इतनी बड़ी हो चुकी है और अब मां भी बन गई है!!! ओ माय गॉड ये तुम हो सोनम कपूर।' बता दें कि सोनम कपूर और आनंद आहूजा ने बीते महीने बेटे के जन्म की खुशखबरी शेयर करते हुए एक नोट साझा किया था, जिसमें लिखा था, ठ20.08.2022 को, हमने अपने खूबसूरत बच्चे का दिल से स्वागत किया। उन सभी डॉक्टरों, नर्सों, दोस्तों और परिवार को धन्यवाद जिन्होंने इस यात्रा में हमारा साथ दिया। यह केवल शुरुआत है लेकिन हम जानते है हमारी जिंदगी हमेशा के लिए बदल गई है। - सोनम और आनंद।अर्जुन कपूर के वर्कफ्रंट की बात करें तो वे इन दिनों 'द लेडीकिलर' की शूटिंग में बिजी हैं। इस फिल्म में उनके साथ एक्ट्रेस भूमि पेडनेकर मुख्य भूमिका में नजर आने वाली हैं। इसके अलावा अर्जुन के पास विशाल भारद्वाज की फिल्म 'कुत्ते' भी है। जिसमें वह पुलिस कॉन्स्टेबल का किरदार निभाते हुए दिखाई देंगे। इस फिल्म में अर्जुन के साथ एक्ट्रेस तब्बू, राधिका मदान और नसीरुद्दीन हैं। हाल ही एक्टर फिल्म 'एक विलेन रिटर्न्स' में नजर आए थे। इस फिल्म में उनके साथ दिशा पाटनी, तारा सुतारिया और जॉन अब्राहम भी थे।

इन फिल्मों में दिखा टीचर्स और स्टूडेंट्स का संघर्ष, कुछ कर गुजरने को प्रेरित करती हैं कहानियां

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली । कहा जाता है कि एक शिक्षक के हाथ में अपने छात्रों के भविष्य के साथ-साथ उनके आत्मनिर्माण का भी जिम्मा होता है। टीचर्स डे हमें सभी को हमारे स्कूल के दिनों की मीठी-कड़वी यादों को ताजा कर देता है। उनकी डांट से लेकर छात्रों को प्रेरित करने तक, एक ऐसा रिश्ता स्थापित हो जाता है, जिसमें एक शिक्षक अपने छात्र की सफलता को निजी सफलता के तौर पर देखता है। आज भले ही हम उन दिनों में वापस नहीं जा सकते, लेकिन हमें उन दिनों को फिल्मों के माध्याम से याद कर सकते हैं, जब एक टीचर अपने छात्रों के साथ संघर्ष करते हुए उन्हें मोटिवेट करता है और उनकी सफलता में अपनी सफलता को देखता है। आइए जानते हैं इस टीचर्स डे के मौके पर, ऐसी ही कुछ बॉलीवुड फिल्मों के बारे में, जो आपको सोचने पर मजबूर कर देंगी। इस लिस्ट में सबसे पहला नाम ऋतिक रोशन की फिल्म सुपर 30 का आता है। इस बायोपिक फिल्म में ऋतिक रोशन ने आईआईटी प्रवेश परीक्षा की कोचिंग करवाने वाले

टीचर आनंद कुमार की भूमिका निभाई है। बच्चों को सही तरह से शिक्षा मिले, ये सुनिश्चित करने के लिए वो एक लंबी लड़ाई लड़ते है, लेकिन जब उन बच्चों का हौसला टूटने लगता है तो वो एक ढाल बना उनके बच्चों की रक्षा करते है और अंत में उनकी मेहनत रंग लाती है। विकास बहल के निर्देशन में बनी इस फिल्म की कहानी बिहार के पटना में सुपर 30 के नाम से आईआईटी की कोचिंग देने वाले आनंद कुमार से प्रेरित है। रानी मुखर्जी की फिल्म हिचकी टॉरेट सिंड्रोम वाली एक महिला की इर्द-गिर्द घूमती है। जिसें एक टॉरेट सिंड्रोम स्कूल में शिक्षिका की जॉब मिल जाती है। लेकिन वो अपने विरोधी और परेशान करने वाले छात्रों को उनकी पढाई के प्रति पूरी क्षमता का एहसास कराने की कोशिश करती है। सिद्धार्थ मल्होत्रा द्वारा निर्देशित ये फिल्म समाज में आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बच्चों और टीचर के बीच अनौखे रिश्ते को दर्शाती है। हेलेन केलर और उनके शिक्षक जीवन पर आधारित ये फिल्म उन शिक्षकों के लिए है, जिन्होंने अपने छात्रों को हाथ पकड़ कर भवसागर पार कराया हो। अमिताभ बच्चन और रानी मुखर्जी अभिनीत ये फिल्म एक शिक्षक और छात्र के बीच संबंध प्रदर्शित ही नहीं करती बल्कि ये विश्वास भी जगाती है कि शिक्षक अगर चाहे तो वो अपने छात्रों से हर परिस्थिति का सामना करना सीखा सकता है।

शुभमन गिल से ब्रेकअप की खबरों के बीच हेयर स्पा कराती आईं नजर, चेहरे पर दिखीं दिलकश मुस्कान

(आधुनिक मसाचार सेवा)
नई दिल्ली । सचिन तेंदुलकर की बेटी सारा तेंदुलकर ने एक वीडियो शेयर किया है यह एक प्रमोशनल वीडियो है इसमें उन्हें हेयर स्पा कराते हुए देखा जा सकता है इसमें वह काफी खूबसूरत लग रही है उन्होंने व्हाइट कलर का टॉप और ब्लैक कलर की पैंट पहन रखी है और वह काफी खूबसूरत लग रही है वीडियो में वह एक सलून में जाकर अपने बालों को स्पा करवा रही हैं इसमें वह काफी रिलैक्स मूड में नजर आ रही है सारा तेंदुलकर ने वीडियो एक साथ शेयर किया है इसमें वह उत्पाद की सराहना भी कर रही हैत् सारा तेंदुलकर का वीडियो इंस्टाग्राम पर वायरल हो गया है इसे 250000 से ज्यादा लाइक्स मिले हैं वहीं इस पर 1200 से ज्यादा कमेंट किए गए हैं कई लोगों ने तस्वीरों पर क्यूट, यू आर स्टनिंग, वंडरफुल सारा, क्यूट सुपरस्टार, हेलो ब्यूटीफुल, सारा मास्टर ब्लास्टर जैसे कमेंट किए हैं वहीं एक ने लिखा है, 'शुभमन गिल आपने गोल्ड के चक्कर में डायमंड को खो दिया गौरतलब है कि सारा तेंदुलकर और शुभमन गिल के अफेयर की खबरें काफी वायरल हो रही थी हालांकि दोनों ने कभी भी अपने रिश्ते की पुष्टि नहीं की थी इसी बीच दोनों के अलग होने की भी खबरें आई हैं वहीं क्रिकेटर शुभमन गिल को हाल ही में एक्ट्रेस सारा अली खान के साथ स्पॉट किया गया है सारा अली खान के साथ स्पॉट होने के बाद शुभमन गिल और सारा अली खान के बीच अफेयर की बातें सोशल मीडिया पर वायरल होने लगी है शुभमन गिल क्रिकेटर है उन्होंने कई बड़ी पारियां खेली है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।